दीवाना

तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया





शिक्षा—किसी दूसरे की योग्यता को कम

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : इन दिनों संघर्ष काफी करना पड़ेगा और कई तरह के उतार-चढ़ाव देखने में आयेंगे, लाभ खर्च बराबर हो, यात्रा में सुख, हालात नियत्रण अधीन ही चलेंगे, मित्र एवं परिवार से सुख सहयोग, यात्रा छोड़ दें।

वृष : इन दिनों जोश-क्रोध या जल्दबाजी से काम न लें वर्ना हानि का सामना करना पड़ेगा, स्थायी कामधन्धों से धन लाभ होता रहेगा, प्रयास करने पर सफलता नसीब होगी, वैर-विरोध से परेशानी ज्यादा रहेगी।

मिथुन : कई तरह के शुभ फलों से भरपूर होने पर भी यह सप्ताह काफी संघर्षपूर्ण सा महसूस होगा, और कोई दुर्घटना भी होते-होते टल जाएगी, भाग्य साथ देता रहेगा, परिश्रम का फल पूरा न मिलेगा।

कर्क : यह सप्ताह भी तकरीबन पहले जैसा ही रहेगा, सफलता के मार्ग में कुछ बाधायें तो अवश्य आयेंगी परन्तु प्रयत्न करते रहने पर आपके काम बन जायेंगे, मित्रों एवं अच्छे लोगों के सहयोग से काम बन जायेगा।

सिंह : घरेलू समस्यायें अधिक रहेंगी, सेहत खराब, आर्थिक चिन्ता भी बनेगी, अन्य दिनों में संघर्ष तो काफी आयेंगे, फिर भी आपकी अपनी योजनाओं में सफलता मिलती रहेगी, व्यय कुछ अधिक होगा।

कन्या : शत्रु एवं रुकावटों पर विजय पायेंगे, किसी विशेष उलझन से छुटकारा मिल जायेगा, कामकाज की स्थिति में भी सुधार होगा, परिवार से सुख भी एवं चिन्ता भी रहेगी, व्यय अधिक होगा।

तुला : सप्ताह अच्छा रहेगा परन्तु घरेलू हालात से परेशानी बन सकती है, सेहत की भी संभाल जरूरी है, कारोबार सुधरेगा और आर्थिक लाभ भी पहले से अच्छा होने लगेगा, यात्रा में कष्ट।

वृश्चिक : इन दिनों कोई विशेष घटना हो सकती है जिससे परेशानी काफी होगी परन्तु आर्थिक दृष्टिकोण से देखें तो यह सप्ताह अच्छा रहेगा, नई योजना के साथ व्यापार बढ़ेगा, परिवार से सुख।

धनु : सप्ताह संघर्षमय है फिर भी बार-बार प्रयत्न करने पर सफलता मिल जायेगी, कोई, न कोई समस्या बनी ही रहेगी, आर्थिक तंगी या सेहत की खराबी परेशानी का कारण बन सकती है।

मकर : सफलता में रुकावट या लाभ आशा से कम मिलेगा, व्यापार में भी दिल न लगेगा, मानसिक परेशानी ज्यादा रहेगी, अन्य दिनों में शुभ-अशुभ मिश्रित फल मिलेंगे, आय में वृद्धि पर व्यय भी कम न होगा।

कुम्भ : परिश्रम करने पर सफलता मिलेगी और काम भी ठीक समय पर पूरे होते रहेंगे, सप्ताह अच्छा है परन्तु संघर्ष भी काफी करना पड़ेगा, कामकाज में सुधार होगा, चोट लगने का भय है, व्यय बढ़ेगा।

मीन : सोशल कामों में समय ज्यादा व्यतीत होगा, कुछ नई आशायें जाग उठेंगी और प्रयत्न करने पर कामों में सफलता मिल जाया करेगी, समस्यायें काफी रहेंगी परन्तु इनका समाधान भी साथ ही साथ होगा।

आपके पत्र

मैं दीवाना का बहुत पुराना पाठक हूं। दीवाना एक ऐसी पत्रिका है जो हर बूढ़े जवान के लिए हंसी का खजाना है।

दीवाना अंक दो मिला, मन खुशी से झूम उठा, मुखपृष्ठ पर जहीर अब बस देखा, अच्छा लगा इसके अतिरिक्त फिल्मी गाने, काकाजी के कारतूस मोटू-पतलू पाक क्रिकेटरों के व्यंग्य चित्र और हीरा लाल के साथ-साथ लेखिका संगीता द्वारा लिखी कहानी अनहोनी बहुत अच्छी लगी। कृपया आप दीवाना का साईज कुछ छोटा करके पृष्ठ बढ़ा दें तो मजा आ जायेगा।

ओम प्रकाश सहगल—फरीदाबाद

दीवाना का नया अंक प्राप्त हुआ। अंक बहुत मनोरंजक था। दीवाना में जितने स्तम्भ आते हैं उतने स्तम्भ किसी भी पत्रिका में नहीं आते। दीवाना की जितनी प्रशंसा करो उतनी कम है। जब तक दीवाना नहीं आता मेरा मन किसी भी काम में नहीं लगता। दीवाना का हर अंक आपके विशेषांकों का उत्कृष्ट हीरा होता है। सब एक से बढ़ कर एक होता है। कृपया आप मोटू-पतलू को रंगीन दिया करें तो अच्छा रहेगा। पत्रिका की सारी खूबियों के बाबजूद मुझे एक शिकायत है। सामग्री में लेख नहीं हैं, कुछ ज्ञानवर्धक लेख भी होने चाहिएं।

मुकेश भटनागर—चित्तौड़गढ़ (राज०)

आपका दीवाना साप्ताहिक का नया अंक प्राप्त हुआ जिसे पढ़कर मेरा मन मयूर हो उठा, मानो लगता है कि दीवाना दुनिया के आसमां के जैसे हर कोने-कोने में फैला हुआ है। मुझे इस तरह कहानी पसन्द आयी—अनहोनी, अण्डे का चक्कर, मोटू-पतलू, चुनावों में पीटे हुए नेता क्या करें?, परलोक दल, जूडो कैराटे कैसे सीखें? गरीब चन्द की डाक और जींस की महिला दीवानी बहुत पसन्द आया। आप दीवाना में हास्य चुटकुले और हास्य कविताएं तथा कार्टून अधिक छापते तो पढ़ने में बहुत मजा आता।

राज कुमार देवकुलियार—"राजा"

लम्बे इन्तजार के बाद दीवाना का अंक पांच मिला। इस अंक का जितना इन्तजार किया, उतना ही ज्यादा यह अंक रोचक लगा। मगर कई स्थाई स्तम्भ (परोपकारी, मदहोश, चाचा बातूनी, सवाल यह है) गायब थे। इस अंक के पंचतंत्र 'गुलामी का सुख' ने हमें बहुत ही अच्छी शिक्षा दी! काका के कारतूस आजकल अच्छे धमाके कर रहे हैं। 'पाक क्रिकेट टीम क्यों हारी' का दीवाना विश्लेषण पढ़ा, बहुत अच्छा लगा। इसके अलावा 'घर की फालतू चीजों का इकेबाना में प्रयोग', 'मोटू पतलू', 'दीवाना बेरोजगारी गाईड', 'सुपरगर्ल' स्तम्भ अच्छे लगे।

दीवाना का हर अंक हमें पूरी तरह दीवाना बना देता है।

सुरजीत—फरीदाबाद

दीवाना का १५ मार्च का अंक मिला। इस अंक के मुखपृष्ठ को देखकर ही जो हंसी प्रारम्भ हुई तो सबसे अन्त में सुपर गर्ल पढ़कर ही रुकी।

बेरोजगारी गाइड पढ़कर मैंने भी आजन्म बेरोजगार रहने का निश्चय कर डाला। फैण्टम के पृष्ठ देखकर मन खिल उठा। दीवाना अब पुनः रोचक बनता जा रहा है, फिर भी यदि आप क्यों और कैसे तथा खेल-खेल में जैसे बेकार कालमों को हटा कर दीवाना कार्ड तथा मनोरंजन स्ट्रीट प्रारम्भ कर दें तो मजा आ जाए!

रमेश कुमार—बनौली

मुख पृष्ठ पर

क्या करें जब खड़े खड़े
यूं उमर गुजरती जाये,
सारी बिरादरी पहुंच गई
पर बस नजर न आये।
बस नजर न आये
अब कैसे समय बितायें,
चिल्ली बोला झटके से
अपनी अपनी चाल चलायें॥

दीवाना
अंक : ७ वर्ष : १६
१५ अप्रैल १९८०

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ रु० वार्षिक: ४८ द्विवार्षिक: ९५ रु०

अगर प्राचीन काल में पार्लियामेंट होती !

अगर प्राचीन काल व देवताओं के युग में पार्लियामेंट होती तो विरोधी पार्टी वाले कैसे प्रश्न पूछते। कहां-कहां की कौड़ी वह ढूंढ़ कर लाते और क्या-क्या गुल खिलाते-उसकी एक झलक।



मधुबन में गुण्डागर्दी हद से ज्यादा बढ़ गयी है। अकेली गोपियां मधुबन की तरफ जाते हुए भी डरने लगी हैं। गोपियों के सिर से मटकी छीनना, उनके कपड़े चुराना और ईवटीजिंग आये रोज की बात हो गई है।



ब्रह्मा जी जिस कमल पर बैठे हैं प्लास्टिक का बना हुआ है। असली फूल नहीं है।



शिव जी की जटाओं से जो गंगा निकल रही है उसमें उनके सिर की रूसी या डेंडरफ बड़ी मात्रा में बह रहा है। इससे गंगा के किनारे बसने वाली जनता के स्वास्थ्य को गम्भीर खतरा पैदा हो गया हैं।



कुबेर ने भगवान के खजाने में करोड़ों रुपये का घोटाला किया है। वह धन स्विस बैंकों में जमा हैं। कुबेर का पी० ए० विदेशों की सद्भावना यात्रा के बहाने स्विटजरलैंड में पैसे जमा कराने जाता है।


गीता उपदेश पूंजीवादी, प्रतिक्रियावादी और बूजुआ विचारों पर मोहर लगाने की एक ऐसी समझी हुई चाल है। मेरे पास इस बात का सबूत है कि कृष्ण सी० आई० ए० का ऐजेन्ट है।
गीता उपदेश
इन्द्र देव
इंद्र देव अश्लीलता को बढ़ावा दे रहे हैं। वह वर्षा इसलिए नहीं करते ताकि वर्षा के लिए गांव की कुंआरी लड़कियों को नंगे होकर हल चलाना पड़े।
सरस्वती देवी कार्पोरेशन के स्कूलों में जाती ही नहीं है। वह इंगलिश मीडियम स्कूलों का दौरा करने में सारा समय लगाती हैं।
सरस्वती देवी
श्रीगणेश
शिवजी ने गणेश के सिर पर हाथी का सिर ट्रांसप्लांट कर दिया, लेकिन शिवजी के पास एम० बी० बी० एस० की डिग्री नहीं है। बगैर एम. बी. बी. एस. डिग्री के शिव जी को किसने आपरेशन करने की आज्ञा दी?
महाभारत का युद्ध एक पोलीटिकल स्टंट है। इस झगड़े का फैसला जनमत संग्रह द्वारा होना चाहिये। जनता कौरव व पांडवों में से जिसे चुनेगी उसे ही राज्य सौंप दिया जाना चाहिये।
महाभारत का युद्ध
सूर्य देव
सूर्य देव ने गांव पर कम चमकना शुरू किया है। अपना अधिकतर प्रकाश सूर्य शहरों पर ही डाल रहे हैं। इसलिये ग्रामीण क्षेत्र में निरन्तर कड़की आती जा रही है और शहरी लोग धूप सेक रहे हैं।

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

अवतार सिंह बिट्टू—भटिण्डा : चाचा जी, अगर दुनिया में सबकी शक्लें एक जैसी होतीं, तो क्या होता ?

उ० : बड़ा बवाल हो जाता। पहले दिन आपका किसी से झगड़ा होता, दूसरे दिन वह हमारे जूते मार जाता।

राजेश चावला--सहारनपुर : मैं कार्टून भेजना चाहता हूं, किस पते पर भेजूं ?

उ० : दीवाना के कार्टून विभाग के पते पर।

हरी प्रकाश शर्मा—कानपुर : क्या आप यह मानते हैं कि छोटे बच्चे बहुत मासूम होते हैं ?

उ० : एक बार नहीं, हजार बार मानते हैं। कल ही की बात सुनिये, एक छोटा बच्चा भागा-भागा पुलिस स्टेशन गया और थानेदार से बोला, "जल्दी चलिये साहब। एक आदमी दो घण्टे से मेरे पिता जी को मार रहा है।" इस पर थानेदार बोला, "दो घण्टे से। तो तुम पहले क्यों नहीं आये ?" बच्चे ने उत्तर दिया, "तब दो घण्टे से मेरे पिता जी उस आदमी को मार रहे थे।

उमेश ज्ञानचन्दानी, प्रेमी—बिलासपुर : मूंछ मर्दानगी की निशानी होती है, फिर राजनारायण जी दाढ़ी को इतना महत्त्व क्यों देते हैं ?

उ० : क्योंकि उन्हें पता है कि मूंछों ने उन्हें बार-बार तरावड़ी के घाट मरवाया है। जब भी उनकी मूंछ ताव खाकर अकड़ी हैं, उनकी दाढ़ी के बाल नुच गये हैं।

बजरंग शर्मा—श्रीगंगानगर : चाचा जी, जब दिल बेताब होता है, तो क्या होता है ?

उ० : इस प्रश्न के उत्तर में आप ही बताइए कि जब गीदड़ की मौत आती है, तो वह क्या करता है ?

एस० एम० आलमगीर—हजारी बाग : डीयर अंकल, अगर आपकी लाटरी निकल आए तो क्या होगा ?

उ० : 'चाचा बातूनी बूट हाउस' के नाम से एक पुराने जूतों की दुकान खुल जाएगी। आपने सुना होगा कि अधिक खुशी से कोई बेहोश हो जाए तो उसे जूता सुंघाकर होश में लाया जाता है। और यह भी आपको पता होगा कि हमारे चाहने वाले इतने हैं कि एक-एक जूता भी सबने दिया तो जूतों के ढेर के नीचे से हमें निकालने के लिए आपको फायर ब्रगेड की सहायता लेनी होगी। इस पर भी कमाल यह होगा कि जब पता लगेगा कि लाटरी पांच रुपये की निकली है, तो हम और फायर ब्रगेड वाले एक साथ बेहोश हो जायेंगे।

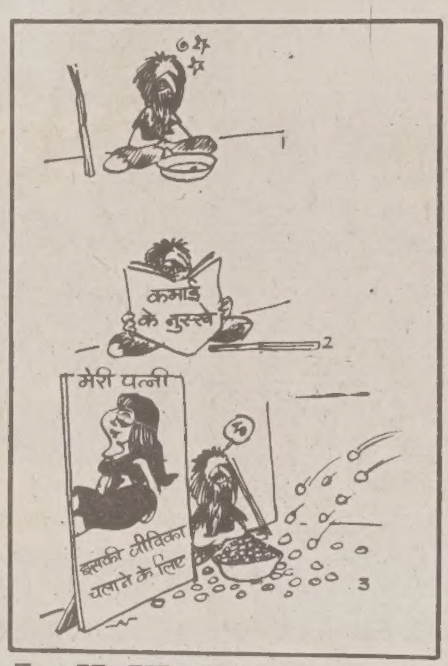
केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : जो लोग जमाने के साथ नहीं चलते क्या वे तरक्की नहीं कर सकते।

उ० : यह कहिये कि वे जमाने को बेवकूफ नहीं बना सकते।

मुकेश कुमार गुप्ता—खुरजा : चाचा जी, क्या चिल्ली की शादी हो चुकी है ?

उ० : क्या आप उसके सिर की हालत देखकर यह अनुमान नहीं लगा सकते कि वह इस मुसीबत से बाल-बाल बचा हुआ है।

विनोद पुरी, रंजू—लुधियाना : दिखावे की मुहब्बत और सच्ची मुहब्बत में क्या अन्तर है ?



उ० : इस प्रश्न का उत्तर इतना आसान नहीं है। इस अन्तर को बताने के लिए एक शेर तो क्या, यह पूरी गजल भी कम है :

कल तक जो कहते थे अपना, आज वही बेगाने हैं,
बेगानों को अपना समझें, हम कैसे दीवाने हैं ?
आँख मिला कर हाल तो पूछो, क्या गुजरी दिल वालों पर,
शम्मा बुझा कर दूर हुए हैं, कहते थे परवाने हैं।
शीशे की दीवार न टूटी तारे तोड़ने वालों से,
इश्क में जो सुनते आए हैं, किस्से हैं अफसाने हैं।
मेरी कहानी सुनने वाले, बात ना कर मजबूरी की,
मिलना हो तो मिलने के भी लाखों और बहाने हैं।

अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : क्या आप श्री राजनारायण से पूछ कर यह बता सकते हैं कि वह आजकल अपनी दाढ़ी का क्या कर रहे हैं ?

उ० : वह अपनी दाढ़ी में तिनका ढूंढ़ रहे हैं।

रविन्द्र सिंह—लुधियाना : चाचा जी, मेरी बीवी कहती है कि वह अमिताभ बच्चन से शादी करेगी, कृपया बताइए, मैं क्या करूं ?

उ० : आप श्री हरिवंश राय बच्चन को अपना पिता मान लीजिए।

रवि भाटिया—शंकर रोड मार्किट : रेल यात्रा और जेल यात्रा में क्या अन्तर है ?

उ० : बिना टिकट सफर करने का।

सज्जन कुमार मोर—डीमापुर : चाचा जी, आपको किस प्रकार के प्रश्न पसन्द नहीं ?

उ० : जिनमें लड़का, लड़की और प्रेम-प्रेमिका की बेकार बातें हों।

मुकेश भटनागर—चित्तौड़गढ़ : चाचा जी, क्या यह बात सही है कि बुढ़ापा बचपन का पुनरागमन होता है ?

उ० : इसके लिए हमारे चचा गालिब ने कहा है :

दिल के बहलाने को गालिब ये ख्याल अच्छा है।

तिलक राज, मुकेश गुप्ता—खुरजा : फूल डाल पर अच्छा लगता है या बाल पर ?

उ० : इस प्रश्न के उत्तर में तो हम आपसे पूछ सकते हैं कि बाल सिर पर अच्छे लगते है या डाल पर ? वैसे हर फूल का हिसाब अलग-अलग है। अगर फूल गोभी का है तो वह डाईनिंग टेबल पर अच्छा लगता है और अगर नरगिस का है तो सुनील दत्त पर।

मोती लाल जैन, 'दीवाना'—डिब्रूगढ़ : चाचा जी, मैं बहुत कम बोलता हूं इसलिए लोग मुझे बुद्धू कहते हैं। मैं आपकी तरह बातूनी बनना चाहता हूं, इसके लिए क्या करूं ?

उ० : इसके लिए आप तनहाई में दीवारों से बातें करने की प्रैक्टिस कीजिए। पर इतना मत भूलिए कि अभी तो आपको लोग बुद्धू कहते हैं, बुद्धिमान बनने के बाद लोग आपके पीछे पत्थर लेकर दौड़ने लगेंगे।

उमेश ज्ञानचन्दानी प्रेमी—नागपुर : क्या राजनारायण ने आपकी भैंस खोली है, जो हाथ धोकर उनके पीछे पड़े हैं ?

उ० : जी नहीं। हम तो यह कह रहे हैं कि कोई उन्हें खूंटे से बांध ले तो उन्हें मुरार जी जल से धो देंगे।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

निर्बल की रक्षा करें और सहारा दें

हरिजनों और दूसरे कमजोर वर्गों पर अत्याचार हमारे समाज पर कलंक है। इससे हमारी प्रगति भी रुकती है।



आइये भारतीय परम्परा को निभायें

हम एक हैं

davp 79/531

मोटू पतलू

पिछले दिनों समाचार पत्रों में एक विज्ञापन छपा. कि एक होटल का मालिक अस्वस्थ होने के कारण स्वयं होटल चलाने की बजाये अपना होटल किराये पर देना चाहता है। यह बात मोटू-पतलू से कभो छुपी नहीं रही कि होटल के धंधे में कितनी कमाई होती है। फिल्म स्टार, वैज्ञानिक, बड़े बड़े बिजनेस मैंन, ऊँचे-ऊँचे नेता और माने हुये वी० आई० पी० यहाँ आ कर ठहरते हैं। विदेशी टूरिस्ट दरियादिली से रुपया बहाते हैं। कौन जाने इनमें से कब किस से पक्का टांका जुड़ जाये और सोने की ऐसी वर्षा होने लगे कि समेटे न समेटी न जा सके।

पर होटल बनाने में करोड़ों रुपया लगता है, यह बात भी किसी से छुपी नहीं। इतना रुपया लगाकर अपना होटल खोलना मोटू-पतलू के लिए ख्वाब की सी बात थी। और रुपया कमाने और नाम चमकाने का यह सुनहरी अवसर वे खोना भी नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने अपना घर-बार सब कुछ बेच-बाचकर जमानत के रुपये जमा किये और होटल का पेशगी किराया देकर वहां का चार्ज सम्भाल लिया। होटल चलाने के लिए मोटू-पतलू के पास कुशल साथियों की कमी नहीं। डाक्टर झटका, नैन सुख, चेलाराम और अंगूठा नन्द के होते हुए भला उन्हें किस बात की चिन्ता हो सकती थी। कोई कसर थी, तो उसे पूरी करने के लिए अकलमन्द उल्लू मौजूद था। बस वे केवल बीस साल के तजुर्बे वाले घसीटाराम से दूर रहना चाहते थे। पर आप ही सोचिये, जहां शहद हो, भला वहां से शहद की मक्खी कैसे दूर रह सकती है? घसीटाराम ने मोटू-पतलू की खुशामद की। उनके पांव दबाये और यह कसम खाई कि वह उनका गला दबाने की बात ख्वाब में भी नहीं सोचेगा। उसने सभी धार्मिक ग्रंथ अपने सर पर रखे और भगवान को हाजिर-नाजिर जानकर बचन दिया कि अब वह कभी किसी का बुरा नहीं चाहेगा।



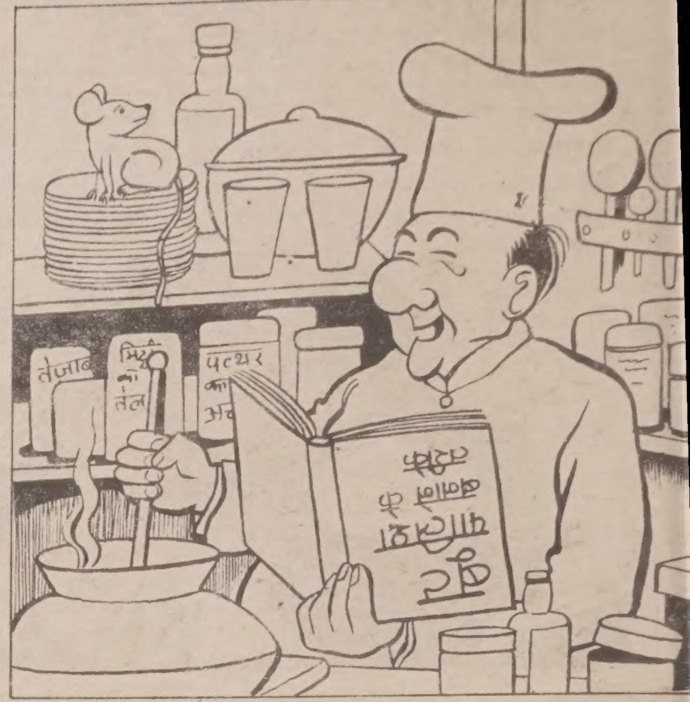


मैं एक फड़कता हुआ चुटकुला सुनाऊं आपको खुश करने के लिए। ग्राहक को खुश करना हमारा पहला असूल है।
एक बार एक फौजी अफसर ने बिस्कुटों के डिब्बे अपने सिपाहियों की ओर फेंके और बोला, 'इन बिस्कुटों पर तुम ऐसे टूट पड़ो, जैसे जंग में दुश्मनों पर टूटते हैं। इस पर तमाम सिपाही बिस्कुटों पर टूट पड़े और दबादब खाने लगे।
क्या मंगाया जाये ?
जो तुम पसंद करो।
उनमें आप जैसा एक सिपाही ऐसा था जो बिस्कुट खाये भी जा रहा था और कुछ बिस्कुट जेब में भरता जाता था।
मेरे जैसा सिपाही ?
आप जैसा भला सिपाही। उससे फौजी अफसर ने पूछा, "मैंने बिस्कुट खाने को कहा था, तुम जेब में क्यो भर रहे हो ?" सिपाही बोला, 'सर आपने इन पर दुश्मनों की तरह टूट पड़ने को कहा था, मैं कुछ दुश्मनों को बंदी भी बना रहा हूं।
तुमने कहा वह भला आदमी मेरे जैसा था।
चुटकुले की बात है जी। हंसने की बात है।
और वह मेरे जैसा आदमी बिस्कुट चुरा रहा था ?
मेरा यह मतलब नहीं था।
और कुछ देर बाद तुम कहोगे मैंने तुम्हारे होटल से चमचे चुराये हैं।
आप समझे नहीं मेरा चु··· चु···
चुटकुला!
यह है हमारे फाईव स्टार होटल के पहले स्टार, जो अब भी इस असूल पर कायम हैं कि ग्राहक को खुश करना इनका परम धर्म है।
और यह हैं, स्टार न० २. होटल का स्टुअर्ट और किचन सर्विस का इचार्ज, पतलू। जीवन में इसने कभी नीचा देखा है, तो केवल कानों से ऊँचा सुनने के नाते, यह दिल का इतना साफ और उजला है जैसे साबुन ५५५ से धुला हो. और टिनोपाल लगा कर सुखाया गया हो। अब ऊँचा सुनने के कारण इससे कोई गलती हो जाये तो इसमें इस बेचारे का क्या कसूर ?
आप होटल की किचन सर्विस से बोले रहे हैं ?
जी हां, मैं चिकिन सर्विस से बोल रहा हूं।
रूम नं० थर्टीन में एक प्लेट मटर भेजिये।
रूम नं० थर्टी में मटर की खीर। अभी भेज रहा हूं साहब
मैंने कहा रूम न० सैवन में अब तक समाचार पत्र नहीं पहुंचा।
क्या कहा अचार नहीं पहुचा ?
समाचार, समाचार···आज का समाचार।
आम का अचार ? अभी भेज रहे हैं साहब।

यह स्टार नं० ३, डाक्टर झटका। इनकी डाक्टरी नहीं चली, पर दिमाग चल गया। जिनका हर काम लाजवाब है, पर इनका अपना मर्ज लाइलाज है। देखने में इनकी आंखें ऐसी हैं, जैसी संतरे की फांकें। इनका एक मरीज जब कब्रिस्तान जा बसा और दवा खाना पागल खाना बन गया तो इन्होंने अपने अकल के खाने से काम लिया और ग्रीन स्टार होटल के बावरची खाने में कुक बन गये। दवाईयों को कूटने पीसने के बाद सब्जियों और मसालों को भी घोटने पीसने में इनका दावा है कि यह ऐसा स्वादिष्ट खाना बना सकते हैं कि खाने वाला सब्जी छोड़ दे और अपनी उंगलियां खा जाए।

जरा देखिये, यह अपनी आंखों से संतरे की फांकों का काम लेकर होटल के किचिन में अपनी कैसी डाक्टरी छौंक रहे हैं।

कहिये, आप कब आ रहे हैं इस ग्रीन स्टार होटल में खाना खाने के लिए?



इस मुर्गे की आँखों की बीनाई कमजोर थी। इसकी आंखें ठीक करने के लिये इसे "विटामिन ए" का इंजैक्शन लगा दूं।



यह है हमारा स्टार न० ४, डिटैक्टिव चेलाराम। चूहे जैसे दांतों वाला प्राईवेट जासूस, जो हर बात को शक की नजर से देखता है और किसी को छींक भी आ जाये तो उसमें से क्राईमस्टोरी ढूंढ़ने लगता है। चेलाराम ग्रीन स्टार होटल का रिसैप्शनिस्ट बन गया है। अपने पद के अनुसार वह कहीं भी जा सकता है और किसी से भी मिल सकता है। इसका विचार है कि स्मगलरों और हर प्रकार के अपराधियों को पकड़ने के लिए सबसे अच्छी जगह होटल है।





और यह है हमारा पांचवा फिल्म स्टार, होटल का वेटर, घसीटाराम; जिसे पाँच साल की उम्र में ही होटल चलाने का बीस साल का तजुर्बा था। इसने कसम खाई है कि मोटू-पतलू का गला दबाने की बात ख्वाब में भी नहीं सोचेगा। और कभी किसी का बुरा नहीं चाहेगा। और इस कसम के साथ ही शुरू होती है...




ग्रीन स्टार होटल की
रंगीन शाम
ईमानदारी से काम करने का वचन देकर आज मैं कितना खुश हूं।
यह हलकापन है बुलडोजर मेरे पांव का कचरा कर दिया
कर्तव्य पालन की भावना से मैं अपने मन में कितना हलकापन अनुभव कर रहा हूं।
ए वेटर ?
अभी आया सर। जरा इस टेबल की सर्विस पूरी कर लूं।
देख रहे हो क्या कर दिया है तुमने
वही दिया है जिसका उन्होंने आर्डर दिया था। उसमें फालतू तो कुछ नहीं है।
?
वेटर—! ए वेटर!
क्या इस टेबल के ऊपर कोई नही आयेगा आर्डर लेने ?
इस टेबल के ऊपर···?
?
लिजिये आ गया में इस टेबल के ऊपर। आर्डर दीजिए सर।
सर का मतलब है, अब यहां चढ़ने का इरादा है ?
नीचे उतर कर बात करो।
पता है मेरा गला बैठ गया है चीख-चीख कर।
जी, मैं अभी आप का गला दबा देता, पर मैंने मोटू-पतलू के सामने कभी किसी का गला न दबाने की कसम खाई है।


मीनो लाओ, और बताग्रो क्या ताजा ग्रौर बढ़िया चीज बनी है ?
तुमने कोई ग्रच्छी चीज खाई है ?
जी मैंने कसम खाई है ।
कसम खाई है ।
जी, मैंने कसम खाई है कि कभी किसी का बुरा नहीं चाहूंगा ।
बुरा नही चाहूंगा ? क्या मतलब है ?
मतलब है जी, मैं आपका भी बुरा नहीं चाहूंगा ग्रौर ग्रापको यह मशवरा दूंगा कि होटल के गंदे-संदे खाने से पेट खराब करने की बजाये घर जाकर बीवी बच्चों के साथ स्वादिष्ट भोजन कीजिये और ग्रपने पैसे बचाइये ।
?
यह तुम होटल चला रहे हो या मेरा कबाड़ा कर रहे हो ?
जीवन में पहली बार ईमानदारी से काम ले रहा हूं । ग्रौर मैंने इनका बुरा नहीं चाहा, इस पर भी तुम खुश नहीं हो मेरी सर्विस मे ।
चलो छोड़ो । बहस मत करो ग्रौर हमारा ग्रार्डर लो । एक प्लेट ग्रामलेट ग्रौर दो प्लेट चिकन सूप ।
यस सर यस सर ।
हमारा आर्डर भी ले लेना । एक प्लेट राईस, एक प्लेट ग्रालू पनीर ।
ग्रौर लस्सी का गिलास ।
ग्रभी लाया
और यह ग्रार्डर लेकर बेटर घसीटाराम, किचिन सर्विस के इंचार्ज पतलू के पास पहुंच गया ।
टेबल न० ८ का ग्रार्डर लिखो ।


एक प्लेट आमलेट और दो प्लेट चिकन सूप।
एक प्लेट में आराम लेट और एक प्लेट किचन सूप। ठीक है। नोट कर लिया।
टेबल न० ५ का आर्डर है, एक प्लेट राईस, एक प्लेट आलू पनीर।
एक प्लेट आईस, एक प्लेट आलू की खीर।
और एक लस्सी का गिलास।
और एक रस्सी का गिलास।
यह आर्डर लेकर किचन सर्विस का इंचार्ज पतलू किचिन में चीफ कुक डा० झटका के पास पहुंच गया।
यह क्या लिखा हैं ? एक प्लेट आराम लेट ? इसका मतलब एक प्लेट में आराम से लेट होगा।
यह मतलब होगा कोई बड़ी सी प्लेट भेज दो जिसमें वह आराम से लेट कर खाना खा सके।
दो प्लेट किचन सूप ? क्या मतलब है ? वह पानी जिससे किचन के झूठे बरतन धोये गये हों।
यह है किचन सूप। बरतन धोये का पानी। इसमें तो सभी स्वादिष्ट खानों का स्वाद होगा। एक ही डिश में सब का मजा आ जायेगा। वाह वाह, क्या पसन्द है इस नाजुक मिजाज ग्राहक की।
लगता है घसीटा राम से आर्डर लेने में कोई भूल हुई है। वह बहरा कुछ ऊंचा सुनता है। यह किचन सूप की बजाये कैंची का सूप होगा।
सूप में कैंची डाल दे अपना क्या जाता है।
लो अब यह दूसरा आर्डर भी तैयार है। एक प्लेट आईस एक प्लेट आलू की खीर और एक गिलास रस्सी।



और अन्त में घसीटाराम दोनों आर्डर लेकर ग्राहकों की मेजों की ओर चल दिया ।
वेटर बनने में सबसे बड़ा फायदा यह है कि अगर ग्राहक खुश हो जाये तो बहुत मोटी टिप देता है ।
मैंने बर्फ नहीं मंगवाई थी । मैंने एक प्लेट राइस कहा था और तुम आईस उठा लाये । और आलू पनीर की बजाये तुम रबड़ी में आलू डाल लाये हो । मैंने आलू पनीर कहा था या आलू की खीर ?
एक गिलास लस्सी मांगी थी और तुम गिलास में रस्सी ले आये ।
इस रस्सी से अपना गला दबाऊंगा ?
आप जो चाहें करें मैंने सौ रुपये में भी किसी का गला न दबाने की कसम खाई है ।
हमने चिकन सूप कहा था, यह तुम क्या उठा लाये हो ?
जो आर्डर दिया था, वही लाया हूं सर ।
क्या मतलब है ? चमचे की बजाए हम कैंची से सूप पीयेंगे क्या ?
जैसे आपका जी चाहे वैसे ही पीजिए । चमचे और कैंची के बिल में कोई अन्तर नहीं है ।
आँखें फाड़ कर देखो, यह क्या है सूप के अन्दर ?
आपकी आंखें में कैसे फाड़ सकता हूं सर, यह कैंची है सूप के अन्दर ।
कैंची तो मुझे भी दिखाई दे रही है और क्या है सूप के अन्दर ?
कैंची के पास यह जो केंचवे की तरह हिल रहा है···?



आगामी अक में अपने इन प्रिय कलाकारों से फिर मिलियें ।

धारावाहिक उपन्यास

अनहोनी

12

लेखिका-संगीता

इतने में एक नौकरानी अन्दर आई और पद्मिनी से बोली—

'बेटी···यह मामाजी आपसे मिलना चाहते हैं।'

पद्मिनी चौंक पड़ी। नौकरानी बाहर चली गई थी, यशपाल दरवाजे पर खड़े थे। उन्होंने पलट कर धीरे से दरवाजा बंद किया और पद्मिनी की ओर मुड़े···उनके चेहरे से आश्चर्य टपक रहा था···एक सिमटा हुआ भंवर-सा दिखाई दे रहा था। वह पद्मिनी के पास पहुंचे तो पद्मिनी ने पूछा—

'मामा ! अब आपकी तबियत तो ठीक है ?'

'तबियत तो ठीक है बेटी···लेकिन यह सब यह क्या हो रहा है ?'

'मेरी शादी···।' पद्मिनी ने शरमा कर नजरें झुका लीं।

'शादी···लेकिन किस से ?'

'मामा ? तुम्हें याद होगा···गांव में एक दुलारी काकी रहती थीं···उनका एक लड़का था अविनाश···।'

'हां हां बेटी···याद है।'

'मामा ! मेरी शादी उसी अविनाश से हो रही है।'

'लेकिन बेटी···एक लड़की दो शादियाँ कैसे कर सकती है ?

'क्या मतलब ?' पद्मिनी ने चौंक कर पूछा।

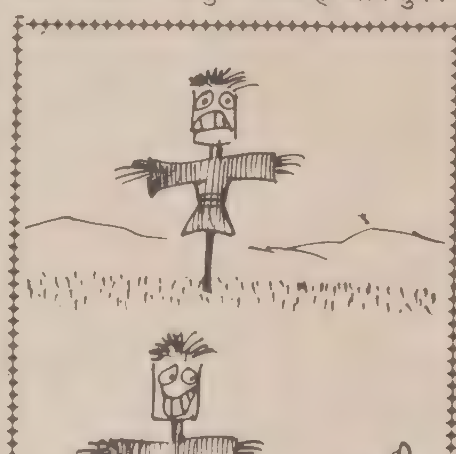
'बेटी···तुम्हें यह भी तो याद है कि तुम्हारी शादी बचपन में किसके साथ हुई थी।'

'याद है मामा···' पद्मिनी का दिल जोर-जोर से धड़क उठा, 'लेकिन···लेकिन दुल्हा तो बाढ़ में बह गया था मामा ?

'हां बेटी···तुम्हारा दुल्हा बाढ़ में जरूर बह गया था बारात के साथ···लेकिन पूरी बारात डूब गई थी लेकिन दत्त को भगवान ने बचा लिया था।'

'क्या ?'

'हां बेटी···'दत्त' को एक पेड़ के गुद्दे से लिपट कर बहते हुए फौजी हैलीकाप्टर ने देख लिया था और उसे बचा लिया गया था। कई दिन हस्पताल में रहने के बाद वह गांव वापस आ गया था बेटी···दत्त के पिता और पूरे बाराती बाढ़ का शिकार हो गए थे लेकिन दत्त को यह विश्वास नहीं हुआ था कि तुम डूब गई हो। उसका विचार है कि जिस प्रकार भगवान ने उसे बचा लिया है उसी प्रकार उसने तुम्हारी भी रक्षा की होगी—और बेटी इसीलिए दत्त ने आज तक शादी नहीं की—वह कहता था कि जब तक उसको तुम्हारे मर जाने का प्रमाण नहीं मिल जाता तब तक वह दूसरी शादी नहीं करेगा···और बेटी अब जब उसे पता चलेगा कि तुम जिंदा हो और तुमने



उसके होते हुए दूसरी शादी कर ली है तो सोचो कि उसके दिल पर क्या बीतेगी ? यह भगवान की नजरों में कितना बड़ा पाप होगा···उन के साथ कितना बड़ा अन्याय होगा।'

मामा और भी जाने क्या बोलते जा रहे थे···मगर पद्मिनी तो कुछ भी नहीं सुन रही थी। उसे तो ऐसे लग रहा था जैसे एकाएक सारा ब्रह्मांड भूचाल की लपेट में आ गया हो—सारा संसार पिघलता हुआ लावा बनकर रह गया हो—जैसे वह स्वयं उस जलते हुए लावे में एक तिनके के समान झुलसती, तैरती हुई चली जा रही हो—जैसे उसका शरीर आग का एक गोला सा बन गया हो—।

'हे भगवान ! यह सब क्या है ?'

'मेरा पति जिंदा है।'

'मेरा पति जिंदा है ?'

'मैं बाल-विधवा नहीं हूं।

'मेरी शादी अविनाश से नहीं हो सकती।'

'अविनाश जो मेरे बचपन का साथी है।'

'जो मेरी आत्मा है।'

'जिसने आज तक मेरी प्रतीक्षा की है।'

'जिसके लिए मैं स्वयं बरसों तड़पती रही।'

'क्या मैं अपने उस अविनाश से जुदा हो जाऊंगी ?'

'क्या मैं उसकी जीवन-संगिनी नहीं बन सकूंगी ?'

'नहीं नहीं—यह नहीं हो सकता।'

'मैं अपने अविनाश के बिना जिंदा नहीं रह सकती।'

'मैं अविनाश के बिना जिंदा नहीं रह सकती।'

'मुझे हाथ जोड़ कर मामा से प्रार्थना करनी चाहिए।'

'डैडी और मम्मी को तो मेरे पहले पति के जिंदा होने का कोई ज्ञान नहीं।'

'और न मेरे पति को ही यह पता है कि मैं जिंदा हूं।'

'यह भेद केवल मामा को मालूम है।'

'मामा मुझसे बहुत प्यार करते हैं।'

'अगर मामा ने यह भेद किसी पर न खोला तो मैं अविनाश की हो जाऊंगी।'

'मेरा अविनाश मुझे मिल सकेगा।'

'मामा यह भेद जरूर छुपायेंगे।'

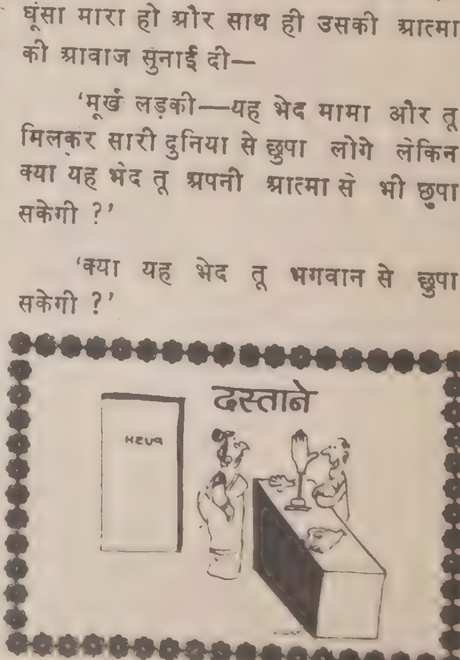
'मामा यह भेद जरूर छुपायेंगे।'

लेकिन अचानक उसे ऐसा लगा जैसे किसी अज्ञात शक्ति ने उसके सीने पर एक घूंसा मारा हो और साथ ही उसकी आत्मा की आवाज सुनाई दी—

'मूर्ख लड़की—यह भेद मामा और तू मिलकर सारी दुनिया से छुपा लोगे लेकिन क्या यह भेद तू अपनी आत्मा से भी छुपा सकेगी ?'

'क्या यह भेद तू भगवान से छुपा सकेगी ?'

दस्ताने



'उस पवित्र अग्नि से छुपा सकेगी जिसके गिर्द सात फेरे लेकर तूने अपने पति के साथ जीवन भर साथ निभाने का प्रण किया था।'

'क्या तू जीवन-भर यह बात भूल सकेगी कि तेरा पति जिंदा है और तू पति की जिंदगी में ही अपने प्रेमी की पत्नी बनी बैठी है।

'और क्या तू इस प्रकार स्वयं अविनाश को भी धोखा नहीं देगी ?'

'वह अविनाश जिससे तू प्यार करती है और जो तुझ से प्यार करता है।'

'अगर जीवन में कभी यह भेद अविनाश पर खुल गया तो उसकी नजरों में तेरा क्या सम्मान रह जाएगा ? क्या वह तुझसे घृणा न करने लगेगा ?'

'और फिर—फिर एक पति के जीवन में किसी दूसरे मर्द से किसी लड़की की शादी हो भी सकती है ?

'तू अविनाश के साथ फेरे करेगी लेकिन भगवान उन्हें स्वीकार न करेगा—तेरे और अविनाश के ब्याह की सब रस्में एक ढोंग होंगी—एक नाटक होगा।'

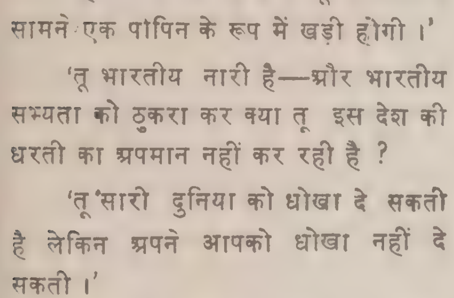
'तू अविनाश के साथ जितने दिन तक जिंदा रहेगी उसका एक-एक क्षण पाप से भरा होगा।'

'जीवन में तू अपनी ही अपराधन बन कर रहेगी—मरने के बाद तू भगवान के सामने एक पापिन के रूप में खड़ी होगी।'

'तू भारतीय नारी है—और भारतीय सभ्यता को ठुकरा कर क्या तू इस देश की धरती का अपमान नहीं कर रही है ?

'तू सारी दुनिया को धोखा दे सकती है लेकिन अपने आपको धोखा नहीं दे सकती।'

'तू दत्त की ब्याहता स्त्री है—उसकी पत्नी है—धर्म और न्याय—दोनों की दृष्टि



में—यह बात तू जीवन भर नहीं भूल सकती ?

'तुझे—यह शादी रोकनी ही पड़ेगी।'

'तुझे अविनाश को ठुकराना ही पड़ेगा।'

'तुझे दत्त की पत्नी बनकर ही रहना होगा।'

'तू अपनी आत्मा का हनन नहीं कर सकती।'

'भूल जा अविनाश को—।'

'तेरा स्थान तेरे पति के पास है।'

'उसी के चरणों में—।'

पद्मिनी का दिल जोर-जोर से धड़क रहा था—उसकी सांसें धौंकनी के समान चल रही थीं, मानो वह कई मील की चढ़ाई पैदल चढ़ कर आई हो—उसका सारा बदन यूं पसीने से भीगा हुआ था मानो वह जलती हुई भट्टी के सामने बैठी हुई थी—उसका बदन कांप रहा था जैसे हवा में बोट कांपती



है—यशपाल मामा बड़े आश्चर्य से उसे देखे जा रहे थे धीरे-धीरे पद्मिनी की सासें ठीक होती गईं—उसकी धड़कनें नियंत्रण में आ गईं और उसके चेहरे से एक दृढ़ निश्चय की झलक उभरी और आंखों में से साहस झांकने लगा -।

धीरे-धीरे यशपाल मामा के चेहरे पर संतोष दिखाई देने लगा लेकिन एक ऐसा संतोष जिसमें दुःख भी था—वह खेद भरे स्वर में बोले—

'बेटी—मैं जान गया हूं कि अविनाश से तेरा बचपन ही का रिश्ता था लेकिन अगर मुझे यह बात तभी मालूम होती तो तेरे फेरे दत्त के साथ नहीं अविनाश के साथ ही होते मैं यह भी जानता हूं कि अविनाश से अलग होते हुए तुझे कितना दुःख होगा—लेकिन बेटी···! !'

'मामा···।' पद्मिनी की आवाज कांप रही थी, 'आप कुछ मत कहिए मामा मैं सब कुछ सोच चुकी हूं—मैं—में जिसकी पत्नी हूं वही मेरा देवता है—मेरा सब कुछ है—में अविनाश से शादी कर ही कैसे सकती हूं।'

'बेटी···!' मामा की आवाज कांप गई।

इतने में चार-पांच लड़कियां दौड़ती हुई अन्दर आईं और मामा को देखकर ठिठक गईं। मामा धीरे से आंसू पोंछते हुए उठ गए। एक लड़की ने पद्मिनी का कंधा पकड़ कर कहा—

'हाय! तू तो बड़ी सौभाग्यशाली निकली।'

'क्या प्रलय ढा रहा है तेरा दुल्हा।'

'बड़ा हाथ मारा है यार।'

'मेरा तो कलेजा मुँह को आ रहा है।'

'जी चाहता है तुझसे छीनकर अपने सात फेरे करा लूं।'

'सचमुच तू स्वर्ण अक्षरों में भाग्य लिखवाकर लाई है।'

'पद्मिनी ने दृढ़ता से होंठ भींच लिए थे···उसे अनुभव हो रहा था जैसे हर सहेली का एक-एक शब्द जलते हुए बर्छे की नोंक बनकर उसके दिल में छेद कर रहा हो···वह होंठों को भींचकर आँसुओं को रोकने का प्रयत्न कर रही थी लेकिन उससे सहन न हो सका और उसने भर्राई हुई आवाज में कहा—

लेबल

'चुप रहो···भगवान के लिए ऐसा कह कर मुझे पाप मत लगाओ।'

'पाप···! यह तू क्या कह रही है ?'

अचानक एक नौकरानी दौड़ती हुई आई और बोली—

'मुहूर्त का समय हो गया···दुल्हन को बाहर बुलाया जा रहा है।'

शेष पृष्ठ ३४ पर

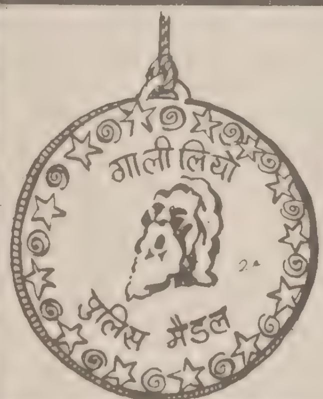
पुलिस पदक

हाल में हुई घटनाओं ने जिसमें पुलिस ने हीरो का रोल अदा किया सारे देश को झकझोर दिया। पुलिस ने अपना वह घिनौना रूप पेश किया जिसकी किसी को आशा नहीं थी। इन्हीं घटनाओं को ध्यान में रख कर हमने कुछ नये पुलिस पदकों की संभावना पर सोचा है। पदकों का डिजायन भी हम्हींने तैयार किया है। इन पदकों को सुपात्र पुलिस जनों को प्रदान कर जले पर नमक छिड़कने का आनन्द लिया जा सकता है।



तैमूर लंग स्वर्ण पदक

यह पदक उन पुलिस वालों के लिए होगा जो अपहाजों, अंधों, लूलों व लंगड़ों आदि पर अत्याचार करेंगे, जैसेहाल में ही दिल्ली में पुलिस ने अंधों पर अमानषिक लाठी चार्ज किया।



गालीलियो पुलिस मैडल

सबसे ज्यादा गाली बकने वाले अथवा नागरिकों से अपशब्द प्रयोग करने वाले पुलिस मैन/अफसर को यह मैडल दिया जाये।

पुलिस लट्ठ सेवा पदक

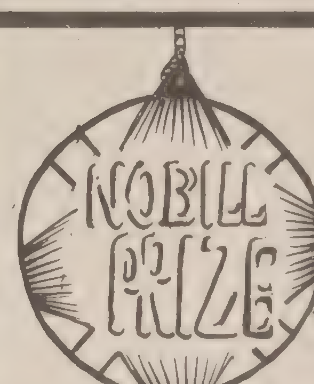
यह पदक उस पुलिस पार्टी को प्रदान किया जाये जो अचानक ही निसहाय व गरीब व्यक्तियों पर टूट पड़ती है व लूट, मार-पीट, बलात्कार कर नारायणपुर के दृश्य दिखाती है।



बिल्ला-रंगा मेमोरियल मैडल

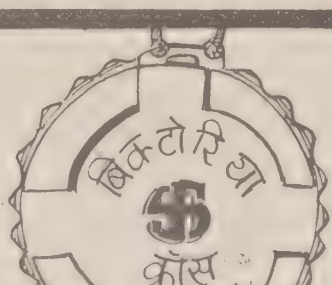
यह महान् मेडल उन पुलिस वालों को प्रदान किया जाये जो हिरासत में ली गई महिलाओं से बलात्कार करें। जैसे आगरा के दो पुलिस वालों ने एक हरिजन लड़की से किया था।





नो बिल प्राइज

आपने भी देखा होगा कि आपने इलाके में कांस्टेबल रेहड़ी से अथवा दुकानदारों से माल लेते हैं लेकिन पैसे नहीं देते। अर्थात बिल चुकता करने की बात ही नहीं करते। ऐसे कांस्टेबिल नो बिल लगने के हकदार होंगे।

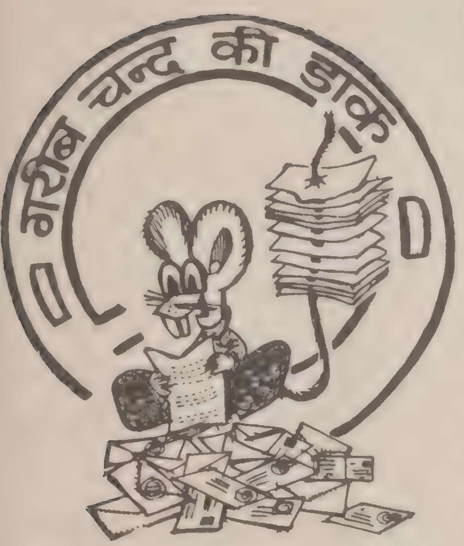


विक्टोरिया क्रॉस

कुछ पुलिस वालों को प्रायः इलाके से बंधी रकम प्राप्त होती है या वे बगैर पैसे लिए कोई काम नहीं करते। दूसरे शब्दों में पैसे देकर कुछ भी करवा लो यानि पैसों के लिए उनका फर्ज व जमीर बिक चुका होता है। ऐसे बिकाऊ पुलिस जनों को विक्टोरिया क्रॉस का जगमगाता पदक प्रदान किया जाये।



डा० जेकिल एण्ड मि० हाइड कॉस्य पदक—कई पुलिस वाले चोरों, जेब कतरों व गुंडों से मिले होते हैं या लोगों का तो यह कहना है कि सारी शरारतें खुद पुलिस वाले ही करवाते हैं। ऐसे महान् पुलिस जन उपरोक्त पदक के अधिकारी होंगे। (डा० जेकिल एण्ड मि० हाइड लुई स्टीवेन्सन के प्रसिद्ध कहानी के पात्र हैं। डा० जेकिल दिन को सभ्य व्यक्ति बना रहता है और रात को अपनी दबा पोकर प्रेत जैसा रूप धारण करता है उत्पात मचाता है।)



सुरेश कुमार बुधवानी—रायपुर : गरीब चन्द जी, दुश्मन पर कब दया आने लगती है ?

उ० : जब आपके पास गुस्से का स्टॉक खत्म हो जाता है और ब्लैक में भी नहीं मिलता। मजबूरी में दया से काम चलाना पड़ता है।

बलीराम धर्मानी—रायपुर : गरीब चन्द जी आपका जन्म किस शुभ स्थान पर हुआ था तथा आपका नाम किस ब्राह्मण ने गरीब चन्द रखा।

उ० : लोग बिल देखकर अधमरे हो जाते हैं लेकिन मां बदौलत बिल में ही पेट से जलवा फरोश हुये।

अति उल्ला खान सेमरी—बलिया : जिन्दगी में इन्सान की सबसे बड़ी ख्वाहिश क्या होती है ?

उ० : सबसे बड़ी बेवकूफी करना अर्थात उन चीजों को पाना जो दुख की जड़ हैं जैसे धन, कुर्सी, यश या सुन्दरी।

के० पी० अरोड़ा—काशीपुर : गुण्डों के होंसले जरूरत से ज्यादा क्यों बढ़ गये हैं ?

उ० : क्योंकि राजनीति व गुंडागर्दी ने पार्टनर शिप में दुकान खोली है।

अरुण पासवान—भीस्ती पारा : गरीब चन्द जी, आप अपने कितने बच्चों के साथ बाल वर्ष उत्सव मनाए।

उ० : हिन्दुस्तान में सब कुछ सम्भव है लेकिन बच्चों की गिनती करना नहीं।

नारायण चक्रवर्ती—दमोह : गरीब चन्द जी, क्या आपको पत्र रखने के लिए फाइल नहीं मिली, जो पत्र आप अपनी पूंछ पर लटकाए हैं ?

उ० : फायल मिली थी लेकिन वह पेट में चली गयी।

कु० अनजनी पासवान—भीस्ती पारा : गरीब चन्द जी, आपकी बिरादरी का कुतुर चन्द हमारे यहाँ है। मैं उसे क्या उपदेश दूं ?

उ० : उसे उपदेश न दें। बंगाली हलवाई के बनाये सन्देश दें।

वेदपाल शर्मा—दनकौर : गरीब चन्द जी यह माना हमने की आप चूहे हैं और जबाव भी देते हैं लेकिन यह बताइये कि क्या छछूंदर भी आपके रिश्तेदारों में लगती है तो वह कौन हुई ? लेकिन वह चूहे दान में रोटी का टुकड़ा देख कर फंसती क्यों नहीं है ?

उ० छछूंदर तो साहब आपकी रिश्तेदार है इन्सान ही उसकी तरह रंग बदलता है ?

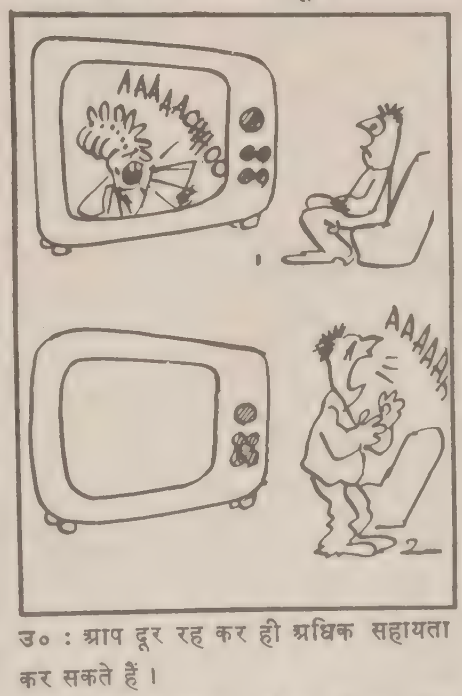
प्रहलाद जसवानी—मण्डला : गरीब चन्द जी, गरीब के पास दिल है तो अमीर के पास ?

उ० : दिल खरीदने वाला मसाला। गरीब का दिल बस धड़कने वाला है उसमें फड़कने का ताव नहीं।

सुरेन्द खुराना पप्पू—मोगा : गरीब चन्द जी, क्या हमने ठीक सुना है कि आप पिक्चर में काम कर रहे हैं ?

उ० : जी हां। इसीलिए आपने आजकल देखा होगा कि अभिताभ के माथे पर चिन्ता की लकीरें खिंच गयीं हैं।

जवाहर लाल—मैहर : मैं आपके पास आकर आपकी सहायता कर सकता हूं ?



उ० : आप दूर रह कर ही अधिक सहायता कर सकते हैं।

लखमी चन्द माधवानी—मैहर : डियर गरीब चन्द जी, मेरी दुकान कपड़े की है। आपके बिरादरी के बहुत रहते हैं कहिये तो आपके पास भेज दूं।

उ : उन्होंने अदालत से जो स्टे आर्डर ले रखा है उसका क्या होगा ?

कान्ती लाल जैसिंघानी—रायपुर : गरीब चन्द जी, आप अमीर से दोस्ती क्यों नहीं करते ?

उ : अमीरों से दोस्ती कर लूं तो खाऊंगा क्या ? घोड़ा कभी घास से यारी कर सकता है।

आनन्द कुमार श्रीवास्तव—बिलासपुर : माई डियर गरीब चन्द जी, यदि कोई सीधी-सादी सी लड़की हो और कोई लड़का उसे अपनी प्रेमिका बनाना चाहता हो तो ऐसी स्थिति में लड़के को क्या करना चाहिए ?

उ० : उसे बहन कहकर नहीं बुलाना चाहिये बाकी जो मर्जी करता रहे।

के० पी० अरोड़ा—काशीपुर : आजकल के नौनिहाल छोटी उम्र में ही वह सब बातें क्यों सीखना चाहते जो कि बड़ी उम्र ही सीखनी चाहियें ?

उ० : क्योंकि आजकल जमाना बड़ा कठिन है। बचपन के बाद सीधा बुढ़पा आता है।

अशोक जौहर 'गगन'—देहरादून : गरीब चंद जी, 'किस्सा कुर्सी का' फिल्म में आपकी इतनी दुर्गति भूतपूर्व मन्त्रियों ने की है फिर भी आप खामोश क्यों है ?

उ० : खामोश नहीं हूं बल्कि हंस रहा हूं। फिल्मों में अमीरों की मिट्टी खराब की जाती है लेकिन वास्तविक समाज में उनका दबदबा निरन्तर बढ़ रहा है उसी प्रकार 'किस्सा कुर्सी का फिल्म' के बाद मेरी जाती दुगने जोर से तरक्की पर है।

हरीचन्द्र सुखदेव उभाले—(महाराष्ट्र) : गरीबचन्द जी आपके रिस्तेदारों ने हमें तंग कर दिया है, क्या आप उन्हें समझा सकते हैं ?

उ० : हम तो आपका भला कर रहे हैं। मेरे रिश्तेदारों के कारनामों की वजह से दिन में कई बार अपने मुंह से हे राम निकलता होगा। उसका फल यमराज के ऑफिस में आपको मिलेगा। पास होने पर लायक नम्बर मिलेंगे।

बधमासिंह निराला—पनागर (जबलपुर) : गरीबचन्द जी, क्या आप अपनी फर्म का नाम 'अमीरचन्द की डाक' नहीं रख सकते ?

उ० : वाह ! कम्पनी मेरी और नाम किसी और का रखूं। फिर अमीरचन्द की डाक रखने में नुकसान भी बहुत है। मैं इन्कमटैक्स के दफ्तर के चक्कर काटूंगा और डाक पड़ी रह जायेगी।

राजेश खन्ना "पप्पू"—माधोपुरी : गरीब चन्द जी, मैं आपको क्या बिल्ली भेज सकता हूं, इन्कार तो नहीं ?"

उ० : फिल्मों वाली इंदिरा बिल्ली है तो जरूर भेजिये। मैं उसकी साड़ी का बार्डर कुतर कर बंगाल की खाड़ी बना दूंगा।

धर्मेन्द्र किशोर दुर्घा—रायपुर गरीब चन्द जी मैं हीरो बनना चाहता हूं, बताइए मैं क्या करूं ?

उ० : पहले परीक्षा में जीरो नम्बर लेकर दिखाइए। अधिकतर हीरो पढाई में जीरो थे।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

फैण्टम — जंगल शहर



डियाना के बच्चा होगा ।
कितनी खुशी की बात है ।
अभी कुछ नहीं पता रैक्स, यह बात गुप्त ही रहने दो, मैंने किसी को नहीं बताया ।
ट···टां··· ट···टां···
FALK & BARRY 1/17
रैक्स क्या बात है ?
कुछ नहीं, मुझे यह रहस्य रखना है ।
रैक्स क्या कहीं दर्द हो रहा है ?
नहीं, ट··· टां···ट··· टां···
यह तो बहुत मुश्किल है मुझे किसी को बताना ही होगा ।
FALK & BARRY 1/18
?
??
डियाना के बच्चा होने वाला है ।!!
!
!
खुशखबरी···
डियाना के बच्चा होने वाला है ।
बहुत अच्छी खबर है ।
आ··· हा··· हा···।
डियाना की तरफ से शुक्रिया ।
FALK & BARRY 1/19
रैक्स, मैंने तुम्हें यह बात गुप्त रखने को कहा था ।
ईमान से मैंने बहुत कोशिश की पर मैं नहीं रख सका ।
यह बात आपसे आप ही फैल गई ।
डियाना क्या मैं तुमसे एक व्यक्तिगत सवाल पूछ सकता हूं ? क्या तुम मां बनने वाली हो?
डा० हेनरी आपको कैसे पता चला···? अभी तो कोई लक्षण दिखाई नहीं देते ।
मुझे हमेशा पता चल जाता है यह मेरी खूबी है ।
इसके अलावा तुम्हारी मां ने मुझे बताया भी था ।


डियाना बच्चे को खोपड़ी वाली गुफा में ही जन्म देगी । ऐसा ही होगा न ?
कौन कहता है ? दादा मौज आप का क्या विचार है ?
फैण्टम की सभी पीढ़ियों का जन्म यहीं हुआ । यह रीति टूटनी नहीं चाहिए ।
FALK & BARRY 1/22
बच्चा यहीं पर होना चाहिए ।
रैक्स, यह तुम्हारे मतलब की बात नहीं है ।
श : श : श :
उससे पूछो ।
'उससे' क्या पूछना है ?
यह कि तुम्हारा होने वाला बच्चा खोपड़ी गुफा में होगा जैसे पहले बीस फैण्टमों का का हुआ ?
अगर यहां न ही करें तो अच्छा है ।
इसका निर्णय तो उसकी मां ही करेगी और···
FALK & BARRY 1/23
क्या?!
दादा मौज अब समय बदल गया है । आजकल की शहरी लड़कियाँ अस्प-
ताल में जाती हैं । इसमें उनके लिए खतरा नहीं
खतरा ? यहां किस चीज का डर है ? शेर ? चीता ? जहरीला सांप ? कोई दुश्मन ?
तुम नहीं चाहते कि बच्चा यहाँ हो ?
FALK & BARRY 1/24
उसको यहां डरने की कोई जरूरत नहीं ऐ चलते-फिरते भूत ।
बांदर जाति उसकी रक्षा करेगी ।
मेरा यह मतलब नहीं गुरन ।
मैं यह चाहता हूं कि डियाना अस्पताल में ही जाये···कहीं कोई मुश्किल न हो ।
मुश्किल ? बच्चा होने में ।
हमारी औरतें कहीं भी जन्म दे देती हैं । नदी के किनारे, खेत में, कहीं पर भी । मुश्किल ? मुश्किल क्या है !
चीफ गुरन···आपका तो बच्चा है । आप ही बताइए यह कितना आसान था !
?!


तुम ठीक हो डियाना, कोई मुश्किल नहीं, हमने तुम्हारा कमरा रिजर्व कर दिया है ।
इतनी जल्दी डाक्टर ! ग्रभी तो बहुत समय है ।
अस्पतालों में बहुत भीड़ है इसलिए यह बहुत जरूरी है ।
ग्रभी नहीं करना ! मैंने ग्रभी निश्चय नहीं किया कि मेरा बच्चा कहां होगा ।
यहां नहीं ! तब कहाँ ?
ग्रभी पता नहीं, हो सकता है कहीं बहुत दूर ।
मै ग्राज डाक्टर से मिली, सब ठीक है ।
ग्रवश्य डियाना, हम ग्रस्पताल का प्रबन्ध कर रहे हैं ।
मैंने डाक्टर का बता दिया है कि शायद मैं यहां न जन्म दूँ ।
नहीं ! तब कहां ?
शायद खोपड़ी वाली गुफा में ।
ग्रोह··· नहीं !
डियाना तुम ग्रपना बच्चा उम गुफा में जनोगी ।
क्यों नहीं मां ! किट की माँ ने तो यही किया था ग्रौर मेरे बहुत से दोस्तों नेभी ।
हम उस जंगल में गए थे। बहुत खतरनाक है।
बहुत सुन्दर है, तुम घबराग्रो नहीं, मैंने ग्रभी फैसला नहीं किया ।
प्राकृतिक जन्म
डेव, यह सब क्या हो रहा है ! तुम्हीं उसे समझाग्रो । इस पागलपन से रोको ।
मगर उसने ग्रभी तो कुछ भी नहीं किया है लिली ।
प्राकृतिक इलाज की जगह पर······।
तुमने प्राकृतिक जन्म दिया था··· क्या वह मुश्किल था
नहीं, बहुत सुन्दर ।
प्राकृतिक जन्म
डेव···मुझे बहुत डर लग रहा है इसके जंगल जाने से । इसे रोको···प्लीज ।

क्यों और कैसे

प्र० : सूच्चाकार स्तम्भ या ओबिलिस्क क्या होते हैं ?

उ० : सूच्चाकार स्तम्भ पतले तथा नोकीले पत्थर की छड़ होता है जिसके ऊपरी भाग की शक्ल पिरामिड के समान होती है। सबसे प्रथम तथा सबसे प्रसिद्ध सूच्चाकार स्तम्भ स्मारक मिस्र में बना था। मिस्र में बने ऐसे स्तम्भ ही सूच्चाकार स्तम्भ माने जाते हैं क्योंकि ये एक ही पत्थर को तराश कर बनाये हुए हैं। अमरीका के भी कुछ प्रसिद्ध स्मारक जैसे "बंकर हिल" तथा वाशिंगटन स्मारक भी सूच्चाकार स्तम्भ के समान ही बने हुए हैं, परन्तु ये बहुत से छोटे-छोटे पत्थरों से निर्मित हैं।

मिस्र के लोगों का विश्वास था कि सूच्चाकार स्तम्भ सूर्य की रूह का घर है। ऐसे सूच्चाकार स्तम्भ जोड़ों में बनाये जाते थे, अक्सर इनके ऊपरी भाग को सोने जैसी चमकदार धातु से मढ़ दिया जाता ताकि सूर्य की किरणों को प्रतिबिम्बित करें। इन स्तम्भों को मकबरों तथा मन्दिरों के द्वारों के दोनों ओर लगाया जाता था। स्तम्भों के चारों ओर बनवाने वाले बादशाह की प्रशंसा के लेख सूर्यचित्रीय भाषा में लिखे जाते थे।

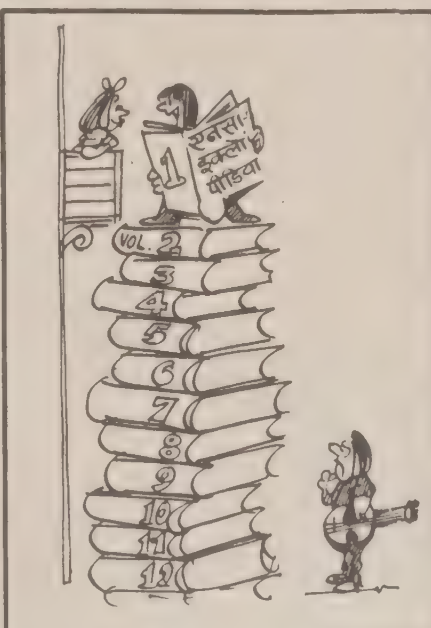
मिस्र के सारे ऐसे सूच्चाकार स्तम्भ आसवान के निकट ग्रेनाइट की खुली खान के पत्थरों से बने हैं। इनमें कुछ स्तम्भ अस्सी फुट से भी ऊंचे हैं। परन्तु आश्चर्य की बात ये है कि मिस्र के लोग इन विशाल स्तम्भों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर कैसे ले जाते थे। इसका कोई वास्तविक प्रमाण भी प्राप्त नहीं है। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि एक ऐसे स्तम्भ को खींचने के लिए बीस हजार व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ेगी। खान से इन स्तम्भों को 'नाइल' नदी तक खींचा गया था फिर इन्हें नावों पर लाद कर भिन्न-भिन्न स्थानों पर पहुंचाया गया था।

पूर्ण ऐतिहासिक काल में मिस्र के ये सूच्चाकार स्तम्भ संसार के हर स्थान को भेजे गये थे तथा रोम के लोग इनसे बहुत प्रभावित हुए थे तथा ३० बी० सी० में मिस्र पर विजय प्राप्त करने के बाद लगभग पन्द्रह ऐसे सूच्चाकार स्तम्भ इटली भेजे थे, परन्तु ये किसी को भी मालूम नहीं कि उन्होंने ये कार्य किस प्रकार सम्पन्न किया था। रोम में सन्त पीटर के महा मन्दिर के सामने लगा ऐसा स्तम्भ भी लगभग इसी काल में लगाया गया था। सोलहवीं शताब्दी के बाद सन् १५८५ में इसे कथैड्रल के सामने के स्क्वायर में लाया गया था इस कार्य को करने में लगभग एक वर्ष लगा था।

उन्नसवीं शताब्दी में तीन सूच्चाकार स्तम्भ मिस्र से लाये गये थे। पहला पेरिस में प्लेस-डी-ला-कोन्डोर्ड में सन् १८३६ में स्थापित किया गया था। दूसरा सन् १८८० में थेमस नदी के किनारे पर लन्दन में लगाया गया था। तीसरा सन् १८८१ में न्यूयोर्क के सैंटरल पार्क में लगाया गया था। लन्दन तथा न्यूयोर्क में स्थापित दोनों ही ये स्तम्भ किल्योपाय्या की सूईयां कहलाती हैं।

प्र० : ईंधन क्या है, ये हमें मूलतः कहां से प्राप्त होता है ?

उ० : ईंधन वो तत्व है जिसे जलाकर हम प्रकाश, गर्मी तथा उर्जा प्राप्त करते हैं।



जलने की क्रिया या दाह्यता एक रासायनिक प्रतिक्रिया होती है। तत्व वायु की आक्सीजन के साथ मिल, जलकर उर्जा उत्पन्न करता है, ये उर्जा प्रकाश तथा गर्मी के रूप में प्राप्त होती है।

ईंधनों में उर्जा मूल रूप से सूर्य से आती है। पौधे जिनसे हमें उर्जा प्राप्त होती है, सूर्य की उर्जा ग्रहण कर अपने टिशुओं का विकास करते हैं। लकड़ी तथा कोयला जलाने पर इसी प्रकार एकत्रित की हुई उर्जा हमें प्राप्त होती है। जब हम तेल जलाते हैं तो हमें लाखों वर्ष पूर्व जीवित पौधों द्वारा एकत्रित तथा संचित उर्जा प्राप्त होती है।

ईंधन कई भिन्न प्रकार के होते हैं, वास्तव में जिस वस्तु को भी जलाया जा सकता है उसे ईंधन कह सकते हैं, परन्तु सबसे साधारण ईंधन लकड़ी, कोयला, प्राकृतिक गैस तथा पैट्रोल हैं। ईंधनों को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। ठोस, तरल तथा गैस वाले या फिर इनका सम्बन्ध इनके प्राप्त होने के स्थान से किया जा सकता है जैसे प्राकृतिक, रसायनिक तथा धातु से उपलब्ध होने वाले।

सबसे पहले मनुष्य ने लकड़ी को ईंधन के रूप में प्रयोग किया, तथा सैंकड़ों वर्ष तक उर्जा प्राप्त करने का मूल साधन बनी रहीं क्योंकि लकड़ी सबसे सस्ती तथा आसानी से उपलब्ध थी। परन्तु सोलहवीं शताब्दी में यूरोप में लकड़ी की कमी अनुभव हुई तथा लकड़ी के साथ-साथ उर्जा प्राप्त करने के लिए कोयले का प्रयोग होने लगा।

कोयले में कार्बन की मात्रा बहुत अधिक होती है। कार्बन अधिकतर ईंधनों में एक बहुत आवश्यक तत्व है। अधिक मात्रा में कार्बन वाले तत्व सुविधा से जलाये जा सकते हैं तथा इनकी लपट में अधिक गर्मी होती है। पक्के कोयले या अैथरसाइट में सब प्रकार और कोयलों से अधिक कार्बन होता है। इसी कारण इससे राख या धुंआ कम बनता है।

सबसे महत्वपूर्ण तरल ईंधन पैट्रोल पदार्थों से प्राप्त होते हैं। इनमें मिट्टी का तेल, पैट्रोल तथा अन्य जलाने वाले तेल सम्मिलित हैं।

आज जब कि संसार में प्राकृतिक ईंधनों के भंडार घटते जा रहे हैं, मनुष्य दिन-रात ऊर्जा प्राप्त करने के साधनों की खोज में लगा है। कोयला की खानों में निकालने लायक कोयला समाप्त हो रहा है, तेल के भंडार दिन रात घटते जा रहे हैं। यही कारण है कि मनुष्य का ध्यान एक बार फिर सूर्य की ओर आकर्षित हुआ है। सौर ऊर्जा निकट भविष्य में एक ऊर्जा का मुख्य स्रोत बनने वाली है।

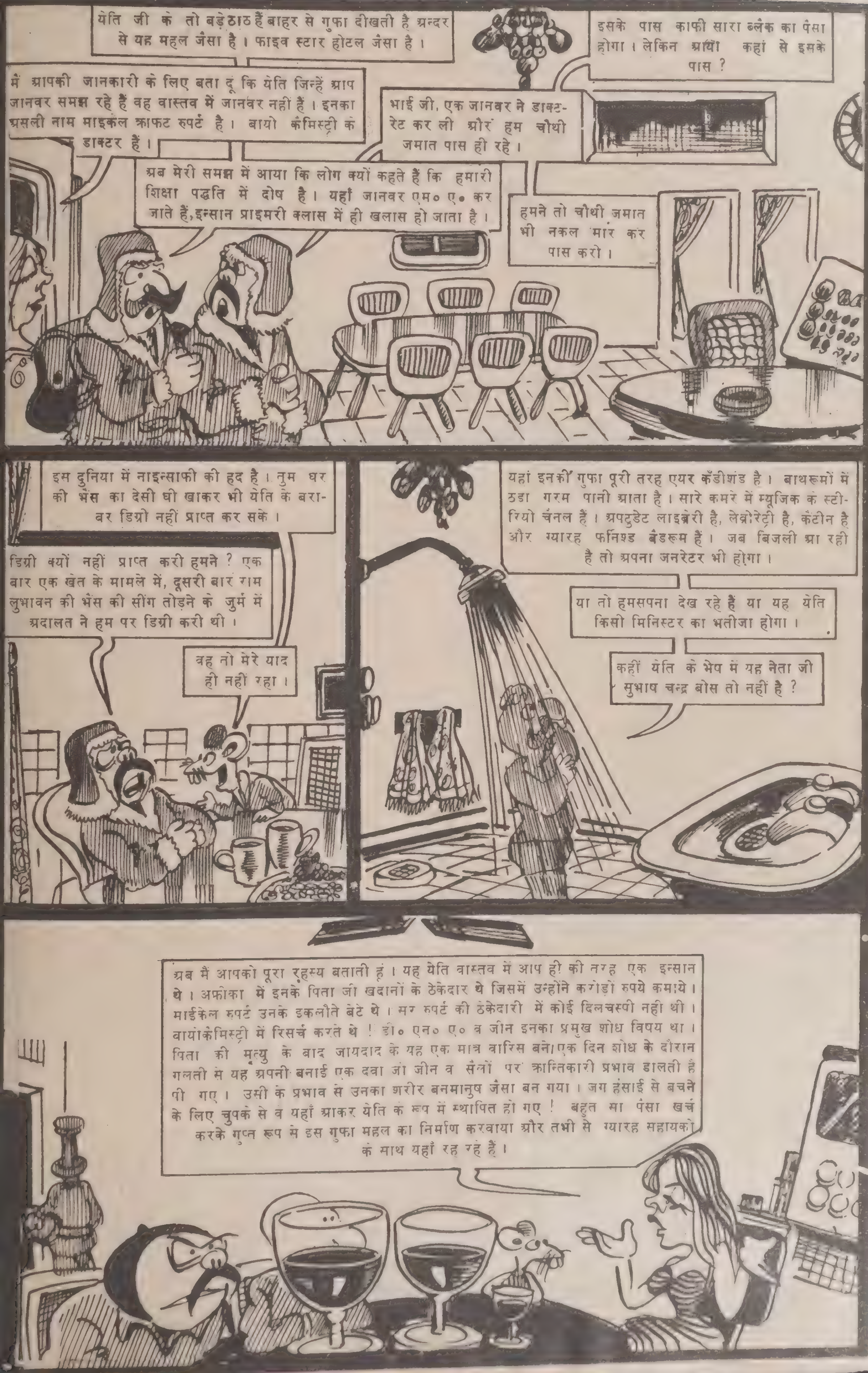
क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

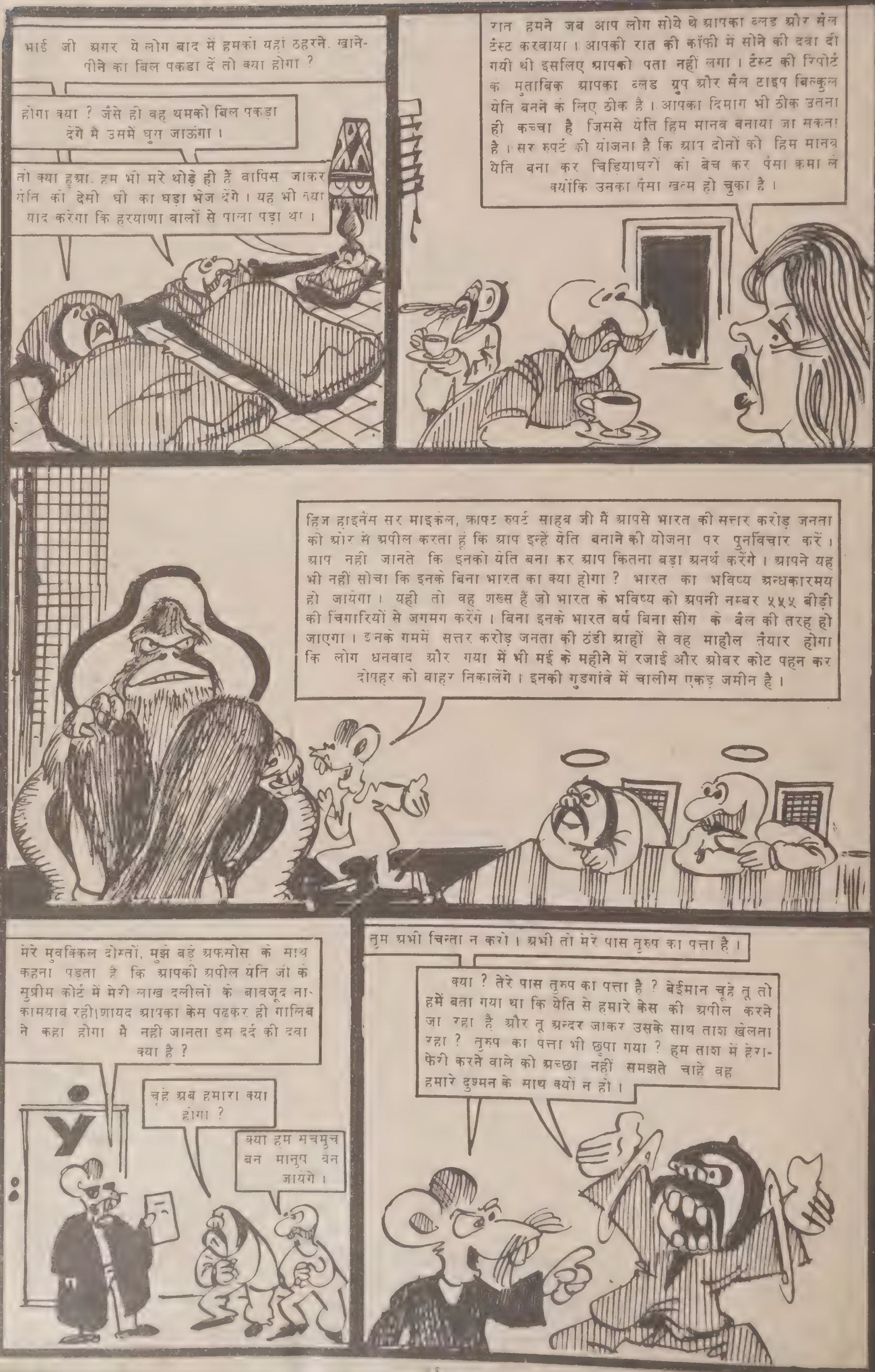
सारस केंद्र

आप



सिलबिल पिलपिल
और
हिममानव
येति
(अंतिम भाग)
पिछले दो अंकों में आपने पढ़ा कि सिलबिल व पिलपिल समाचार पत्रों में येति के देखे जाने के बारे में पढ़ते हैं। उन्हें यह विचार आता है कि यदि वह येति को पकड़ लें तो उसे बेच कर मालामाल हो सकते हैं। मालामाल होने के लालच में वह येति को पकड़ने की योजना बनाते हैं और सिक्किम जा पहुँचते हैं। सौभाग्य से वे उसी पहाड़ी पर जा पहुंचते हैं जहां येति है और येति से उसकी गुफा के बाहर ही सामना हो जाता है। इससे आगे की कहानी…।
ऐह ! येति जी जरा आहिस्ता से चिंघाड़ मारो, लोग सुनेंगे तो क्या कहेंगे ? हमारे दिल कमजोर हैं, इलेक्शन में लोकदल की हार के बाद देसी घी खाने को नहीं मिला। भैंसें भी सींग मारने लगी हैं।
मिस रमानी, इन बेहूदा इन्सानों ने मुझे बहुत तंग कर दिया है इन्हें सम्भालो।
मिस्टर येति आपको ज्यादा गुस्सा नहीं आना चाहिए ! मैं तो पहले ही बता चुका हूं कि आपको ब्लड-प्रेशर की बीमारी है। आज तुम्हारी मां जिन्दा होती तो मुझे यह सब न कहना पड़ता।
यस सर
चूहे तू अपनी बकवास बन्द कर। यह येति तो बिल्कुल इन्सानों की तरह बोल रहा है। इसने अभी-अभी किसे पुकारा ? मिस रमानी को। यह सब क्या चक्कर है ? इसके पास मिस रमानी कहाँ से कैसे आई ?
अगर मेरे पास एनसाईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका होता तो मैं अभी देखकर बता देता।
आप लोग मेरे साथ अन्दर आइए।
अ…अ…आप कौन हैं ?
मैं येति साहब की प्राइवेट सैक्रेटरी हूं
एक येति की प्राइवेट सैक्रेटरी लड़की है और हमारा सैक्रेटरी चूहा है।
हे भगवान इस दुनिया में घोर अन्याय हो रहा है। हम दर-दर की ठोकरें खाते फिर रहे हैं और एक येति प्राइवेट सैक्रेटरी लिए घूम रहा है। हमने तो जब भी आवाज दी मकान मालिक ललिता देवी का चेचकों भरा चेहरा ही दिखाई दिया, वह भी यस सर नहीं कहती, उल्टे दो-चार सुना जाती है।
आप लोग मेरे साथ अन्दर आइए बाकी बातें मैं अन्दर चल कर आपको बताऊंगी। गर्म-गर्म कॉफी की प्यालियां आपका इन्तजार कर रही हैं। कम इन प्लीज दिस वे—


येति जी के तो बड़े ठाठ हैं बाहर से गुफा दीखती है ग्रन्दर से यह महल जैसा है । फाइव स्टार होटल जैसा है ।
इसके पास काफी सारा ब्लैक का पैसा होगा । लेकिन ग्रायाँ कहां से इसके पास ?
मैं ग्रापकी जानकारी के लिए बता दूं कि येति जिन्हें ग्राप जानवर समझ रहे हैं वह वास्तव में जानवर नहीं हैं । इनका ग्रसली नाम माइकल क्राफट रुपर्ट है । बायो कैमिस्ट्री के डाक्टर हैं ।
भाई जी, एक जानवर ने डाक्टरेट कर ली ग्रौर हम चौथी जमात पास ही रहे ।
ग्रब मेरी समझ में आया कि लोग क्यों कहते हैं कि हमारी शिक्षा पद्धति में दोष है । यहां जानवर एम० ए० कर जाते हैं,इन्सान प्राइमरी क्लास में ही खलास हो जाता है ।
हमने तो चौथी जमात भी नकल मार कर पास करो ।
इस दुनिया में नाइन्साफी की हद है । तुम घर की भैंस का देसी घी खाकर भी येति के बराबर डिग्री नहीं प्राप्त कर सके ।
डिग्री क्यों नहीं प्राप्त करी हमने ? एक बार एक खेत के मामले में, दूसरी बार राम लुभावन की भैंस की सींग तोड़ने के जुर्म में ग्रदालत ने हम पर डिग्री करी थी ।
वह तो मेरे याद ही नहीं रहा ।
यहां इनकी गुफा पूरी तरह एयर कँडीशंड है । बाथरूमों में ठडा गरम पानी ग्राता है । सारे कमरे में म्यूजिक के स्टीरियो चैनल हैं । ग्रपटुडेट लाइब्रेरी है, लेब्रोरेट्री है, कैंटीन है और ग्यारह फर्निश्ड बेडरूम हैं । जब बिजली ग्रा रही है तो ग्रपना जनरेटर भी होगा ।
या तो हमसपना देख रहे हैं या यह येति किसी मिनिस्टर का भतीजा होगा ।
कहीं येति के भेष में यह नेता जी सुभाष चन्द्र बोस तो नहीं है ?
ग्रब मैं आपको पूरा रहस्य बताती हूं । यह येति वास्तव में आप ही की तरह एक इन्सान थे । अफ्रीका में इनके पिता जी खदानों के ठेकेदार थे जिसमें उन्होंने करोड़ों रुपये कमाये । माईकेल रुपर्ट उनके इकलौते बेटे थे । मग रुपर्ट की ठेकेदारी में कोई दिलचस्पी नही थी । बायोकेमिस्ट्री में रिसर्च करते थे ! डी० एन० ए० व जीन इनका प्रमुख शोध विषय था । पिता की मृत्यु के बाद जायदाद के यह एक मात्र वारिस बने। एक दिन शोध के दौरान गलती से यह ग्रपनी बनाई एक दवा जो जीन व सैलों पर क्रान्तिकारी प्रभाव डालती है पी गए । उसी के प्रभाव से उनका शरीर बनमानुष जैसा बन गया । जग हंसाई से बचने के लिए चुपके से व यहाँ ग्राकर येति के रूप में स्थापित हो गए ! बहुत सा पैसा खर्च करके गुप्त रूप से इस गुफा महल का निर्माण करवाया ग्रौर तभी से ग्यारह सहायकों के साथ यहाँ रह रहे हैं ।



भाई जी अगर ये लोग बाद में हमको यहां ठहरने. खाने-पीने का बिल पकडा दें तो क्या होगा ?
होगा क्या ? जैसे ही वह थमको बिल पकड़ा देंगे मै उसमें घुस जाऊंगा।
तो क्या हुआ. हम भी मरे थोड़े ही हैं वापिस जाकर येति को देसी घी का घड़ा भेज देंगे। यह भी क्या याद करेगा कि हरयाणा वालों से पाला पड़ा था।
रात हमने जब आप लोग सोये थे आपका ब्लड और सैल टैस्ट करवाया। आपकी रात की कॉफी में सोने की दवा दी गयी थी इसलिए आपको पता नहीं लगा। टैस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक आपका ब्लड ग्रुप और सैल टाइप बिल्कुल येति बनने के लिए ठीक है। आपका दिमाग भी ठीक उतना ही कच्चा है जिससे येति हिम मानव बनाया जा सकता है। सर रुपर्ट की योजना है कि आप दोनों को हिम मानव येति बना कर चिड़ियाघरों को बेच कर पैसा कमा लें क्योंकि उनका पैसा खत्म हो चुका है।
हिज हाइनैस सर माइकल, काफ्ट रुपर्ट साहब जी मैं आपसे भारत की सत्तर करोड़ जनता की ओर से अपील करता हूं कि आप इन्हें येति बनाने की योजना पर पुनर्विचार करें। आप नहीं जानते कि इनको येति बना कर आप कितना बड़ा अनर्थ करेंगे। आपने यह भी नहीं सोचा कि इनके बिना भारत का क्या होगा ? भारत का भविष्य अन्धकारमय हो जायेगा। यही तो वह शख्स हैं जो भारत के भविष्य को अपनी नम्बर ५५५ बीड़ी की चिंगारियों से जगमग करेंगे। बिना इनके भारत वर्ष बिना सींग के बैल की तरह हो जाएगा। इनके गममें सत्तर करोड़ जनता की ठंडी आहों से वह माहौल तैयार होगा कि लोग धनवाद और गया में भी मई के महीने में रजाई और ओवर कोट पहन कर दोपहर को बाहर निकालेंगे। इनकी गुडगांवे में चालीस एकड़ जमीन है।
मेरे मुवक्किल दोस्तों, मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आपकी अपील येति जी के सुप्रीम कोर्ट में मेरी लाख दलीलों के बावजूद नाकामयाब रही। शायद आपका केस पढ़कर ही गालिब ने कहा होगा मै नहीं जानता इस दर्द की दवा क्या है ?
चूहे अब हमारा क्या होगा ?
क्या हम सचमुच बन मानुष बन जायेंगे।
तुम अभी चिन्ता न करो। अभी तो मेरे पास तुरुप का पत्ता है।
क्या ? तेरे पास तुरुप का पत्ता है ? बेईमान चूहे तू तो हमें बता गया था कि येति से हमारे केस की अपील करने जा रहा है और तू अन्दर जाकर उसके साथ ताश खेलता रहा ? तुरुप का पत्ता भी छुपा गया ? हम ताश में हेरा-फेरी करने वाले को अच्छा नहीं समझते चाहे वह हमारे दुश्मन के साथ क्यों न हो।



मुझे अफसोस है कि आप इन दोनों को येति नहीं बना सकोगे
क्यों ?
क्योंकि आपकी दवाई तो केवल आदमियों को बन मानुष बना सकती है न ?
हां ।
तो बस यह आदमी थोड़े ही हैं । यह तो लिफाफे हैं । इनका तो आप ज्यादा से ज्यादा यही उपयोग कर सकते है कि इन पर टिकट चिपका कर विविध भारती को गानों की फरमाईश भेज सकते है या आपके पत्र कालम के लिए सम्पादक के नाम पत्र डाल सकते हैं ।
यह क्या बकवास है ? हम यह दलील नहीं सुनेंगे ।
भापा जी दलील मत सुनो । लेकिन आपको आंखे देखा सबूत दिखाना है । अपनी आंखों से देख लेना । आंखें खुली रखना ! तैयार ? एक··· दो···।
और तीन के साथ ही यह मैंने इनके चेहरों पर से नकाब हटा दिए । इन्होंने रबड़ के मुखोटे पहनकर खुद को मिल-बिल-पिलपिल बना रखा था । गौर से देखिए कि असल में यह क्या हैं । जादू नहीं जन्तर नहीं हाथ···की सफाई है···साहेबान···मेहरबान कद्रदान ।
चलो जान बची तो लाखों पाये, लौट के बुद्धू घर को चले । इतनी मुश्किल से जान बची है । थम तो वापिस जाकर खुशी में ब्राह्मणों का जिमाना । ब्राह्मणों में करण सिंह जरूर होने चाहिए । तुम्हें तो नयी जिन्दगी मिली है । बैंड बाजे के साथ अपने घर में प्रवेश करना ।
म्हारी जान के खाक बची । अरे, म्हारी इतनी बेइज्जती खराब हुयी है कि इससे तो मर ही जाते तो जादा अच्छा रहता । इस चूहे ने हमारी मिट्टी पलीद कर दी । अच्छे खासे इन्सानों को गधों के रूप में पेश कर दिया । बच्चू··· हम भी देख लेंगे मुझे जरा घर वापिस पहुंचने दे । डबल रोटी में हम नीला थोथा मिला देंगे, तेरी पूछ काट कर दरवाजे पर कील से ठोक देंगे ।

जादू की सारंगी

—श्री कृष्ण

एक बार जर्मनी के एक साहूकार ने एक नौकर रखा । वह नौकर बड़ा परिश्रमी और ईमानदार था । सुबह सबसे पहले उठता और रात को सबसे पीछे सोता । जो कठिन काम कोई न कर सकता था, उसे वह चुटकियों में कर देता । किसी ने उसके चेहरे पर दुःख की एक शिकन तक न देखी थी । वह सदा खुश और मुस्कराता रहता ।

उसे नौकरी करते-करते एक साल पूरा हो गया, पर साहूकार ने उसका वेतन नहीं दिया । सोचा कि वेतन पाने पर कहीं नौकरी छोड़कर न चला जाए । नौकर ने वेतन नहीं मांगा और पहले की तरह ईमानदारी और मेहनत से नौकरी करता रहा ।

दूसरा साल भी बीत गया, पर साहूकार ने तब भी उसे कुछ नहीं दिया । इस बार नौकर के मन में कुछ असन्तोष तो जरूर पैदा हुआ, पर कहा उसने कुछ नहीं, और उसी तरह मेहनत से नौकरी करता रहा ।

पर जब तीसरा बरस भी गुजर गया और साहूकार ने कुछ नहीं दिया तो नौकर के मन में खलबली हुई । आखिर कब तक चुप रहता ? एक दिन उसने साहूकार से कहा—'हुजूर, मैंने तीन साल तक बड़े परिश्रम और ईमानदारी से आपकी सेवा की है । इन तीन वर्षों में न मैंने आपसे कभी वेतन मांगा और न आपने दिया । अब में नौकरी छोड़ना चाहता हूं । मेरा हिसाब कर दीजिए ।'

साहूकार अव्वल दर्जे का कंजूस था । उसे मालूम था कि नौकर बहुत सीधा-सादा है और उसे बड़ी आसानी से थोड़े पैसे देकर बहकाया जा सकता है । साहूकार ने जेब में हाथ डाला और एक पैसा प्रति वर्ष के हिसाब से वेतन के रूप में तीन पैसे नौकर के हाथ पर रख दिए और कहा—'लो अपना वेतन और मुझे धन्यवाद दो । बहुत थोड़े मालिक इतना अधिक वेतन देंगे ।'

भोले-भाले नौकर ने बिना कुछ हील-हुज्जत किए तीनों पैसे लेकर जेब में डाल लिए और मन में सोचा—'मेरी जेब में मेरी तीन बरस की कमाई है । अब मुझे मेहनत करने की क्या जरूरत है ? में क्यों तरह-तरह के दुःख उठाऊं ? अब मुझे सब चिन्ताएं छोड़कर मजे से जिन्दगी बितानी चाहिए ।

जब नौकर उछलता-कूदता हुआ जंगल में से गुजर रहा था, तो उसकी भेंट एक बौने से हुई । बौने ने उसे बेहद खुश देखकर पूछा—'भाई, तुम इतने खुश क्यों हो ? लगता है कि संसार का कोई भी दुःख और चिन्ता तुम्हें नहीं है ?'

'मेरे खुश न होने का कोई कारण नहीं है ।' नौकर ने बौने के प्रश्न के उत्तर में कहा—'मैं स्वस्थ हूं, जवान हूं और मेरी जेब में तीन साल की कमाई है । फिर मुझे चिंता और दुःख क्यों हो ?'

'तीन साल की कमाई !' बौने ने आश्चर्य से पूछा, 'कितनी है ?'

'पूरे तीन पैसे !' नौकर ने उत्तर दिया ।

बौना बोला—'भाई, में बहुत गरीब हुं । मेरे पास कानी-कौड़ी भी नहीं है । बूढ़ा होने के कारण में कुछ कमा भी नहीं सकता । तुम जवान और स्वस्थ हो । जितना चाहो, कमा सकते हो । पैसा तुम्हारे हाथ का मैल है । ये तीनों पैसे मुझे दे दो ।'



नौकर दयालु था । उसने तीनों पैसे बौने को दे दिए । उसकी इस उदारता पर बौना बहुत प्रसन्न हुआ । बोला—'भगवान तुम्हारा भला करे । तुम्हारा हृदय बहुत दयालु और पवित्र है । मैं तुम्हें तीन वरदान देना चाहता हूं—हर पैसे के लिए एक वरदान । जो जी चाहे मांग लो ।'

नौकर मन-ही-मन बहुत खुश हुआ । कुछ देर सोचने के बाद वह बोला—'यदि तुम मुझसे खुश हो, और तुम में वर देने की शक्ति है, तो मुझे एक ऐसी गुलेल दो, जिसका निशाना कभी न चूके ।'

बौने ने नौकर को उसकी मनचाही गुलेल दे दी ।

अब नौकर ने कहा—'दूसरे वरदान में मुझे एक ऐसी सारंगी दो, जिसे सुनते ही लोग नाचने लगें ।'

जब सारंगी भी मिल गई, तो नौकर ने तीसरा वरदान मांगा—'तीसरा वरदान मुझे यह दो कि यदि मैं किसी व्यक्ति से कोई प्रार्थना करूं तो वह उसे ठुकराए नहीं ।'

'ऐसा ही होगा ।' बौने ने कहा, और देखते-ही-देखते वह न जाने कहां लोप हो गया ।

नौकर खुशी-खुशी आगे बढ़ा । अभी वह कुछ ही दूर गया होगा कि उसकी भेंट एक यहूदी से हुई जो एक पेड़ के नीचे खड़ा था जिसकी शाखा पर एक चिड़िया बैठी चहचहा रही थी । नौकर को देखकर यहूदी ने कहा—'देखो, कितनी प्यारी चिड़िया है ! यदि तुम इस चिड़िया को पकड़ दो तो मैं तुम्हें मुंह मांगा पुरस्कार दूंगा ।'

'ओह, यह बात है ! में अभी चिड़िया को नीचे गिरा देता हूं ।'

और नौकर ने ज्यों ही गुलेल से चिड़िया का निशाना लगाया, चिड़िया जख्मी होकर कांटेदार झाड़ी में गिर पड़ी । अब क्या था ! यहूदी पेट के बल जमीन पर लेट गया और रेंगकर झाड़ी में घुस गया ।

जब यहूदी झाड़ी के बीच में पहुंचा तो नौकर ने एकाएक सारंगी बजानी शुरू कर दी । सारंगी की धुन का कान में पड़ना था कि यहूदी झाड़ी के अन्दर उछल-उछलकर नाचने लगा । कांटों के चुभने से उसके कपड़े चिथड़े-चिथड़े हो गए और शरीर से खून बहने लगा । यहूदी झाड़ी में से ही चीखने-चिल्लाने लगा—

'हाय, मैं मरा···खुदा के लिए सारंगी बजाना बन्द कर दो···में हाथ जोड़ता हूं···'

पर नौकर ने सारंगी बजाना बन्द नहीं किया और दूसरी धुन छेड़ दी । सारंगी की आवाज धीरे-धीरे तेज होती जाती थी और जैसे-जैसे सारंगी की आवाज तेज होती गई, यहूदी की उछलने की आवाज गति भी बढ़ती गई । आखिर अब यहूदी का बदन चलनी-चलनी हो गया तो वह तड़पकर बोला—'मैं हाथ जोड़ता हूं । खुदा के लिए मुझ पर रहम करो । मेरी मुहरों की थैली ले लो, सारंगी न बजाओ, में मर जाऊंगा ।'

आखिर जब यहूदी ने बहुत हाथ-पैर जोड़े तो नौकर ने सारंगी बजाना बन्द कर दिया और मुहरों की थैली लेकर चलता बना ।

जब नौकर कुछ दूर पहुंच गया तो यहूदी अधनंगा और परेशान हालत में झाड़ी में से निकला और चिल्लाकर बोला—'ठहर जा बदमाश सारंगी वाले ! मुझसे बचकर तू कहां जाएगा ? तुझे मजा न चखाया तो मूंछें मुड़वा दूंगा, हां !'

क्रोध से भरा हुआ यहूदी कचहरी में

पहुंचा और हाकिम से रो कर बोला—'मैं लुट गया, हुजूर, मैं लुट गया ! एक बदमाश ने रास्ते में मुझे लूट लिया ! मेरी मुहरों की थैली—मेरी उम्र भर की कमाई—छीन ली ! मुझ पर दया दिखाइए, हुजूर और उस डाकू को पकड़ मंगाइए।'

हाकिम ने पूछा—'कौन है वह बदमाश, जिसने तुम्हें सताया है ? क्या तुम उसे पहचान सकते हो ?'

यहूदी ने कहा—'हुजूर उसके पास एक सारंगी और एक गुलेल है। इन्हीं दो चीजों से वह पहचाना जा सकता है।'

अभी नौकर कुछ ही दूर गया था कि सिपाहियों ने उसे जा पकड़ा और हाकिम के सामने ले गए।'

हाकिम ने पूछा—'क्यों बे बदमाश, तूने यहूदी की मुहरों की थैली क्यों छीनी ?'

'यह झूठ है, हुजूर !' नौकर ने कहा—'मैंने तो यहूदी को हाथ भी नहीं लगाया, न इसकी मुहरों की थैली छीनी। इसने अपनी इच्छा से ही मुझे मुहरों की थैली भेंट की थी ताकि मैं सारंगी बजाना बन्द कर दूं, क्योंकि यह इसकी आवाज को सह नहीं सकता था।'

यहूदी ने इस बात से साफ इन्कार कर दिया। हाकिम ने भी यह समझकर कि यहूदी अव्वल दर्जे का कंजूस मालूम होता है, भला मुहरों की थैली कैसे भेंट कर सकता है, नौकर को ही दोषी ठहराया।

नौकर की इस लूट का परिणाम लोगों के सामने सदा एक मिसाल के रूप में रहे और कोई फिर ऐसा बुरा काम करने का दुस्साहस न करे, इसलिए हाकिम ने उसे फांसी की सजा दी।

नौकर खूब रोया-चिल्लाया, पर हाकिम ने एक न सुनी। सिपाहियों ने नौकर को जेल में बन्द कर दिया।

जब दूसरे दिन नौकर को सजा देने के लिए फांसीघर में ले जाया गया तो फांसी के तख्ते पर चढ़ते हुए नौकर को एकाएक बौने का दिया हुआ तीसरा वरदान याद आया। उसने मुड़कर हाकिम से प्रार्थना की—'हुजूर, मरने से पहले मेरी एक इच्छा है।''

हाकिम ने कहा—'तुम्हारी क्या इच्छा है, कहो ? हम तुम्हें विश्वास दिलाते हैं कि प्राणों को छोड़कर इस समय तुम जो भी मांगोगे, वह तुम्हें मिल जाएगा।'

नौकर ने कहा—'तो हजूर, मुझे आखिरी बार थोड़ी देर के लिए अपनी सारंगी बजाने की आज्ञा दी जाए।''

इससे पहले कि हाकिम कुछ कहे, यहूदी चिल्ला उठा 'नहीं-नहीं, हुजूर, खुदा के लिए उसे सारंगी बजाने की आज्ञा न दीजिए··· गजब हो जाएगा, हुजूर !'

हाकिम चिल्लाया—'बको मत ! क्या तू चाहता है कि मैं ऐसी मामूली-सी प्रार्थना को भी नामंजूर कर दूं, जबकि यह इसकी आखिरी इच्छा है। यह कभी न होगा।'

अब क्या था ! नौकर ने सारंगी पर धुन छेड़ दी। सारंगी की पहली आवाज पर वे सब उछलने लगे। जल्लाद भी कैदी को छोड़कर नाचने लगा।

इस तमाशे को देखने के लिए बहुत-से लोग वहां दौड़े आए, पर सारंगी की आवाज सुनते ही वे भी सब-के-सब नाचने और उछलने लगे। सारंगी की आवाज ज्यों-ज्यों तेज होती जाती थी, त्यों-त्यों वे और भी उछलने लगते थे। यहां तक कि एक-दूसरे के साथ टकराने से उनके चोटें लगने लगीं।

आखिर हाकिम ने चिल्ला कर कहा—'खुदा के लिए··· सारंगी बजाना बन्द कर दो ! मैं तुम्हें प्राणदान देता हूं।''

अन्धे को क्या चाहिए, दो आंखें ! नौकर ने सारंगी बजाना बन्द कर दिया और यहूदी के पास जाकर कहा—'सच बता तूने यह धन कहां से पाया है ? नहीं तो अब मैं सिर्फ तेरे लिए सारंगी बजाऊंगा।'

यहूदी मारे डर के झट बोल उठा—'मैंने चुराया था, पर पर तुमने ईमानदारी से लिया है।'

हाकिम ने यहूदी को चोर ठहराकर उसे जेल में डाल दिया और वह निर्दोष नौकर खुशी-खुश अपने घर चला गया। ●

दो चौके

(एक)

गावस्कर ने छः रन बनाए
तो हमारी बिटिया ने ताली बजायी,
साहब जादे जरूरत से ज्यादा हर्षाये।
कपिल ने एक चौका लगाया
तो बेगम साहिबा कल से इतरा रहे हैं।
हमारी कोई पूछ नहीं
जो पिछले बीस वर्षों से
चूल्हे में चौका लगा रहे हैं।

(दो)

चौके बाज क्रिकेट खिलाड़ी के साथ
विवाह का प्रस्ताव रखती हीरोइन से,
हमने पूछा—मेम साहब
ये भला आदमी
आपके क्या काम आयेगा ?
हीरोइन बोली,
कुक कई दिनों से छुट्टी पर गया है।
कुछ दिन यही चौका लगायेगा।

अखिलेश्वर

बन्द करो बकवास




आदिमयुग
डैडी आप जरा गुफा का ध्यान रखना । मम्मी और मैं सुपर बाजार की गुफा तक जा रही हैं शापिंग करने । आपको सुपर बाजार से कुछ मंगवाना है ?
हां सुना है कि सुपर बाजार में दूसरे जंगलों से इम्पोर्ट की हुई जानवर की खालों की बहुत बढ़िया डिजायन की मैक्सियां आई हैं । मिनी की सारी सहेलियों के पास जापानी जंगली जानवरों की मैक्सियां हैं ।
शापिंग के अलावा इन औरतों को कुछ सूझता भी है ?
रास्ते में
WHEEEEEEE
पर काका तुम्रा बेहूदा कैसी सीटी बजा रहा है ? वी SSSSS !
ये तेंदुये अपनी पूंछ भी संभाल कर नहीं रखते ।
वीट
YEECHH!!
बबबबचाओ!
सुनो जी कुछ तुम्हें दुनिया जंगल की खबर भी है या बस दिन रात बैठे सोमरस पीते रहोगे ?
क्यों क्या हुआ मिनी की मां ? तुम तो हमेशा कुछ न कुछ गिटपिट लगाये रखती हो । आदमी दो घड़ी चैन की सांस भी नहीं ले सकता । क्या हुआ ?
हुआ मेरा सिर । जंगल में गुंडागर्दी इतनी बढ़ गई है कि शरीफ गुफाओं की बहु बेटियों का बाहर निकलना मुश्किल हो गया है अभी जानते हो हम दोनों सुपर बाजार गयी थीं तो रास्ते में क्या-क्या हुआ ?

खेल खेल में

कृष्ण सहगल—पानीपत

प्र० : जब भारत की सारी टीम इंग्लैंड में ४२ रन पर ग्राऊट हो गई थी तब भारत की ग्रोर से दो प्रारंभिक बल्लेबाज कौन थे जो मैदान में ग्रोपनिंग के लिए उतरे थे।

उ० : उस मैच की दूसरी इनिंग्ज में सुनील गावस्कर ग्रौर फारुख इंजीनियर ग्रोपनर के रूप में उतरे थे। इंजीनीयर आर्नोल्ड की गेंद पर शून्य पर एल. बी. डब्ल्यू. आऊट हुए थे। विकेटों का पतन इस प्रकार हुआ था प्रथम विकेट २ पर इंजीनियर का, दूसरा विकेट ५ पर वाडेकर का, तीसरा विकेट १२ पर विश्वनाथ का, चौथा विकेट १४ पर ब्रिजेश पटेल का, पांचवा विकेट २५ पर गावस्कर का, छटा विकेट २८ पर ग्राबिद ग्रली का, सातवां विकेट ३० पर मदनलाल का. आठवां विकेट ४२ पर प्रसन्ना का, नौवां विकेट ४२ पर बेदी का ग्रौर चन्द्रशेखर ग्रस्वस्थ होने के कारण बल्लेबाजी करने नहीं उतरे। इस मैच में सोलंकर १८ रन बना कर नाट आऊट रहे। वही एक मात्र खिलाड़ी दो अंकों तक पहुंचे थे। इंजीनियर व बेदी ने शून्य बनाए। गावस्कर, विश्वनाथ व प्रसन्ना ने पांच-पांच रन बनाए तथा वाडेकर, पटेल, ग्राबिद ग्रली व मदनलाल ने क्रमशः ३, १, ३ व दो रन बनाये।

अनिल कुमार गारखेल—बरेली

प्र० : भारत में कुम्भ के मेले में २ करोड़ ग्रादमी जाते हैं। इतने ग्रादमी होते हुए वह भारतीय स्पिनर्स को कोई लाल-पीला पत्थर या शक्ति क्यों नहीं दे देते ताकि वह विकेट ही विकेट लें ?

उ० : लाल-पीले पत्थरों से काम चलता होता तो देश कहीं का कहीं पहुंच गया होता। क्रिकेट की तो बात ही छोड़ें, देश के सामने ग्रौर भयानक समस्यायें हैं भूख, गरीबी, बेकारी व ग्रशिक्षा की। लाल-पीले पत्थर पहले यही समस्यायें न हल कर लेते? सच तो यह है कि ग्राडम्बर से कोई समस्या हल नहीं होती इससे तो उल्टी नयी समस्यायें पैदा होती हैं।

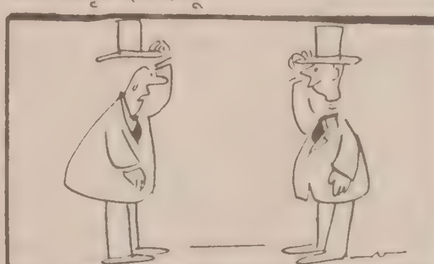
नाथूराम ठाकुर—जबलपुर

प्र० : क्रिकेट के निर्धारित ग्रोवर वाले मैच में यदि ग्रोवर समाप्त हो रहे हों ग्रौर एक गेंदबाज के कुछ ज्यादा ग्रोवर फेंकने हों तो क्या वह लगातार क्रमशः ओवर फेंक सकता है ग्रथवा नहीं।

उ० : नहीं।

ग्रास्ट्रेलियाई प्रेस ग्रौर लेन पास्को का पाजामा

ग्रास्ट्रेलियाई प्रेस ने भी यह नीति ग्रपना ली है कि वह फालतू तमाशों को ग्रधिक महत्व देती है। नवम्बर के ग्रास्ट्रेलियाई क्रिकेट पत्रिका में लेन पास्को का ग्रर्धनग्न चित्र छपा था। यह बात उन दिनों की है जब किम ह्यूज के नेतृत्व में आस्ट्रेलियाई टीम भारत का दौरा कर रही थी। सौ पृष्ठों में से केवल चार पृष्ठ भारत आस्ट्रेलियाई टैस्टों को दिये गये। कानपुर में डियक का १२ विकेट लेना भी एक लाइन ही पा सका। ग्रौर दूसरी ग्रोर लेन पास्को के केवल पाजामा पहनने के कारणों पर लिया इंटरव्यू एक दर्जन पृष्ठों पर फैला था। ग्राहम यैलप ने कलकत्ता में सैंचुरी बनाई उसी दिन आस्ट्रेलियाई घरेलू प्रथम श्रेणी में मार्क ग्रोनील ने शून्य बनाया ग्रौर समाचार पत्रों ने प्रथम पृष्ठ पर शून्य बनाने वाले का चित्र छापा। साथ में विवरण के साथ मार्क तथा एक ग्रौर शून्य बनाने वाले खिलाड़ी का विस्तृत इन्टरव्यू !



आस्ट्रेलियाई दर्शक—आस्ट्रेलिया के दर्शक भी सर्कस का ही कलाकार बन गये है। टैस्ट मैचों के दौरान युवक युवतियों का नंगे होकर मैदान में दौड़ना ग्राम बात हो गई है। ग्रब तो हालत ग्रौर बिगड़ गई है। लोगों ने शराब पीकर मार-पीट करना भी शुरू कर दिया है। पिछले ही दिनों सिडनी में एक टैस्ट मैच के दौरान ७० लोग शराब पीकर हुड़दंग मचाने के जुर्म में गिरफ्तार कर लिए गए थे। कई लोग ग्रब यह कहते सुने गये कि दंगों के डर से टैस्टों में बच्चों को लेकर जाना संभव नहीं रहा।

ग्रब घर की—कानपुर में जब भारत पाक टैस्ट हुआ था तो कुछ पाकिस्तानी पत्रकार साथ में शराब की बोतलें ले गये थे क्योंकि कानपुर ड्राई एरिया में ग्राता है। एक्साइज ग्रधिकारियों ने शराब की बोतलों के साथ रेलवे स्टेशन से बाहर उन्हें ग्राने देने से इन्कार कर दिया। काफी तकरार हुई। बड़े ग्रधिकारियों के हस्तक्षेप पर मामला रफा-दफा हुग्रा। पत्रकार बाहर ग्राये तो कुछ ही देर बाद स्टेशन पर एक्साइज वालों के पास लौटे ग्रौर उन्हें पकड़ कर बाहर लाये जहां रेलवे स्टेशन के बाहर तीन रिक्शे वाले नशे में धुत पड़े थे। नशाबन्दी नीति की दुर्दशा देख एक्साइज वालों के मुंह शर्म से लाल हो गये।

आस्ट्रेलियाई क्रिकेट एक तमाशा

हालांकि ग्रब ग्रास्ट्रेलिया में पेकर सर्कस नहीं रहा लेकिन ग्रास्ट्रेलियाई क्रिकेट ग्रब सर्कस ही बन गया है। इसमें खेल कम ग्रौर नाटक ज्यादा होते हैं। रंगीन टी. वी. (पैकर के) पर लुभावने रंगों के लिए ग्रास्ट्रेलिया में क्रिकेट रंगदार कपड़े पहनकर खेला जाने लगा है। वहां के टी० वी० पर टेस्ट मैचे देखने वालों की कोफ्त का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वहां हर ग्रोवर के बाद टी. वी. पर विज्ञापन ग्राते हैं। हर कैच पर यानि हर विकेट गिरने पर ग्रौर कभी खेल के बीच में भी ? वहां के खिलाड़ी भी सभी राजनारायण जैसा व्यवहार करते हैं। कुछ खिलाड़ियों का रंग ढंग देखिये।

ईयान चैपल—ईयान चैपल कई बार बात बेबात के अधिकारियों से उलझ पड़ते हैं। अम्पायरों से गाली गलौच करने से भी बाज नहीं ग्राते। इन्हीं कारणों से वे कई बार टैस्टों व दूसरे मैचों से बाहर किये गये, फिर लिये गये, दर्जनों बार माफी मांगी ग्रौर फिर वैसे ही हरकतें करने के कारण निकाले गये। एक बार तो ईयान चैपल ने हद कर दी। एक टैस्ट मैच के दौरान ही उन्होंने मैदान में पेंट उतार दी ग्रौर नंगे खड़े हो गयें।

डैनिस लिली प्रसिद्ध तूफानी गेंद बाज लिली भी हँगामे करने में कम नहीं हैं। बल्लेबाजों को धमकाना व ग्रपशब्द कहना तो सामन्य बात है। पिछले दिनों लिली बैटिंग करने के लिए ग्रल्यूमीनियम का बल्ला लेकर आये। टैस्टों में केवल लकड़ी के बल्ले से खेला जाता है। इंगलिश कैप्टन ब्रियरली के ग्रापत्ति करने पर अम्पायर ने लिली से बैट बदलने को कहा। लिली नहीं माना बल्कि ग्रम्पायर से तू तू मैं मैं में नौ मिनट खेल को रोके रखा ग्रौर यह धमकी दी कि ग्रगले दिन फिर वह ग्रल्यूमीनियम का बैट लेकर ग्रायेगा देखें उसे कौन रोकता है। ग्रम्पायर से उलझने के बाद गुस्से में लिली ने बल्ला बहुत दूर दे फेंका था। हार कर क्रिकेट बोर्ड को ग्रल्यूमीनियम बैटों पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ा।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

मीना को रेखागणितसे नफरत थी

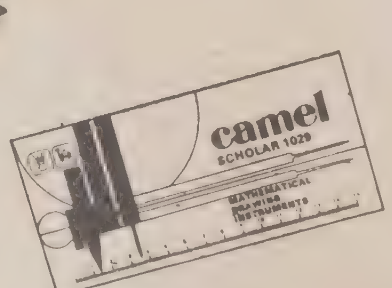
मीना रेखागणित से जितनी घबराती थी, उतनी किसी भी विषय से नहीं.
उसे रेखागणित विषय बड़ा निरस लगता था और न्यून कोण, अधिक कोण, चतुर्भुज और आयत की बातें उसको समझ ही नही आती थी, वह बहुत परेशान थी.
और फिर अचानक उसमें बदलाव आ गया. उसके भाई राजूने उसे पीले—नारंगी रंग का चमकीली धारियोंवाला कम्पास बॉक्स लाकर दिया.
मीना को उस बॉक्स और उसके उपकरणोंसे प्यार हो गया. उस रात उसनें सपने में देखा कि वह एक त्रिभुज के ऊपर चढ़ रही है, एक गोले के अन्दर नाच रही है और एक स्केल पर खड़ी संतुलन कर रही है! उसे बहुत ही मज़ा आया!



अब मीना को रेखागणित से बहुत प्यार है।







कॅमल
इन्स्ट्रूमेन्ट बॉक्स

कॅम्लिन प्रायव्हेट लि.
आर्ट मटीरियल डिविजन
बम्बई - ४०० ०५९.

कॅम्लिन अनब्रेकेबल पेन्सिल बनानेवालों की ओर से

VISION 794 HIN

सवाल यह है?

कि जो कुछ हम कहते हैं उसका असली मतलब क्या होता है?



आगामी अंक में देखिये। इसी पृष्ठ पर एक और लाजवाब सवाल।

पृष्ठ १७ से आगे

सहेलियों ने पद्‌मिनी को घेरकर कहा—

'चल···उठ जल्दी से···रोना धोना हो चुका।'

'नहीं···मैं यह शादी नहीं कर सकती।' पद्‌मिनी गम्भीर स्वर में बोली।

'हाय···!' लड़कियां उछल पड़ीं।

'ऊई··मां···!' नौकरानी हड़बड़ा कर पीछे हट गई।

फिर वह दौड़ती हुई बाहर आई··· उसके चेहरे पर हवाईयां उड़ रही थीं। लग्न मंडप में दुल्हा पटरे पर बैठ चुका था, पंडित श्लोक पढ़ रहा था। नौकरानी को अकेले वापस आते देखकर सेठ सहाब ने कहा—



'अरे··दुल्हन को नहीं बुलाकर लाई, मुहुर्त का समय हो रहा है।'

'मालिक···!' नौकरानी की आवाज कांप रही थी।

'हां हां···क्या हुआ?' सेठ साहब ने घबराकर पूछा।

'वह···वह··बिटिया तो···बिटिया··· तो···।'

'हां हां—क्या वह बिटिया को?'

'बिटिया तो शादी से इन्कार कर रही है।'

'क्या बकती है?' सेठ साहब गुर्राए।

अविनाश ने एक झटके से सेहरा ऊपर उठाकर देखा। दुलारी को सकता-सा हो गया। शोभना ने छड़ी टेककर उठते हुए कहा—

'यह तू क्या कर रही है चम्पा? कहीं पागल तो नहीं हो गई?'

'म··म··मै···मालकिन···भ··भ··· भला झूठ क्यों बोलने लगी।'

'क्या पद्‌मिनी शादी से इन्कार कर रही है?' सेठ साहब गुर्राए।

'हां मालिक।'

'लगता है तूने कोई भयानक सपना देखा है।'

अचानक लग्न-मंडप के पास ही से आवाज आई—

'डैडी···चम्पा ठीक कह रही है।'

'पद्‌मिनी···!' सेठ साहब भौंचक्का से रह गये।

अविनाश हड़बड़ाकर खड़ा हो गया। सारे बाराती आंखें फाड़-फाड़कर पद्‌मिनी के चेहरे की ओर देखते रह गए थे। पद्‌मिनी के चेहरे पर विशेष गम्भीरता थी···एक निश्चय की झलक थी···उसके होंठ दृढ़ता से भिंचे हुए थे। सेठ साहब ने आश्चर्य से पद्‌मिनी को देखा और फिर जल्दी से उसकी ओर बढ़ते हुए बोले—

'बेटी···तुम अपने होश में तो हो?'

'हां···डैडी मैं पूरी तरह होश में हूं।'

शोभना छड़ी टेककर लड़खड़ाती हुई पद्‌मिनी की आवाज की ओर गिरते-गिरते बचीं···फिर कंपकंपाती आवाज में बोलीं—

'पद्‌मिनी बेटी···यह तुम्हें क्या हो गया है? कैसी बातें कर रही हो तुम?'

'मां···!' पद्‌मिनी ने बड़ी मुश्किल से आंसुओं को रोका और दुखी स्वर में बोली, 'मैं मजबूर हूं मां, मैं यह शादी नहीं कर सकती···मैं यह शादी नहीं कर सकती।'

'आखिर क्यों नहीं कर सकती···?' शोभना ने थर-थराती आवाज में कहा, 'तुम्हें एकाएक हो क्या गया? क्या बुराई निकल आई अविनाश में? अविनाश को तुम्हारे लिए हमने वर नहीं चुना था···यह लड़का स्वयं तुमने अपने लिए पसंद किया था।'

'मां···मैं तुम्हें कैसे बताऊं···मां···मैं मजबूर हूं।'

'इस मजबूरी का कारण क्या है?'

'मां···मैं तुम्हें नहीं बता सकती मां।'

'तो फिर मुझे बताओ...।' सेठ साहब आगे बढ़कर गुर्राए, 'तुमने यह नाटक क्यों रचाया था? तुम हमारी और दूसरों की पगड़ियां भरी सभा में उछालो? तुमने आप ही अविनाश को पसन्द किया था···हमने अविनाश से शादी करने के लिए तुम पर कोई दबाव नहीं डाला था···तुम्हारी इ··· पर हमने यह रिश्ता किया था। अ··· अविनाश, उनकी मां और मामा बारात ले कर लाये हैं और तुम ऐसी बात करती हो··· मैं पूछता हूं एकाएक अविनाश में कौन-सा अवगुण आया? क्या वह सुन्दर नहीं? क्या उसकी धमनियों में शरीफ माता-पिता का रक्त नहीं? क्या वह किसी और से प्यार करता है? क्या वह चरित्रहीन है?'

'नहीं नहीं, डैडी अविनाश देवता है··· उसको कुछ मत कहिए।'

'फिर तुम क्या हो जो एक देवता को अपने घर दुल्हा के लिबास में बुलाकर अपमानित कर रही हो? क्या अधिकार है तुम्हें इन शरीफ आदमियों को बारात में बुलाकर यूं लौटाने का? क्यों तुम अनादर कर रही हो सब का···भला इस प्रकार बारात खाली हाथ लौट जायेगी तो हमारा मुंह दुनिया के सामने काला न होगा?'

'डैडी··डैडी···!' पद्‌मिनी की आवाज भर्रा गई, 'मैं आपको कैसे समझाऊं डैडी?'

'बकवास बन्द करो···!' सेठ साहब गुस्से से कांपती आवाज में बोले, 'हम एक भी नहीं सुनना चाहते···हमने तुम्हें इतने लाड़-प्यार से पाल-पोसकर इसलिए बड़ा नहीं किया कि तुम इस प्रकार हमारे मुंह पर कालिख पोतो, हमारी पगड़ी उछालो···हमने इसलिए तुम्हें शिक्षा नहीं दिलवाई कि तुम हमें अपमानित करो···हम तुम्हारी बकवास बिल्कुल नहीं सुनेंगे···शादी होगी और जरूर होगी···चलो···यह हमारी आज्ञा है···चुप-चाप जाकर पटरे पर बैठ जाओ।'

'डैडी···डैडी···!' पद्‌मिनी की आवाज भर्रा गई।

'देखो पद्‌मिनी···अगर तुम एक मिनट के अंदर-अंदर पटरे पर नहीं बैठीं तो याद रखो···।' अचानक सेठ साहब ने बन्दूक की नाल अपनी कनपटी पर रख ली और बोले,



'हम अभी-अभी गोली मारकर अपने आपको खत्म कर देंगे···हम अपनी आंखों से यह नहीं देख सकते।'

'डैडी···!!' पद्मिनी कांप कर पीछे हट गई।

'नाथ···!' शोभना चिल्लाई।

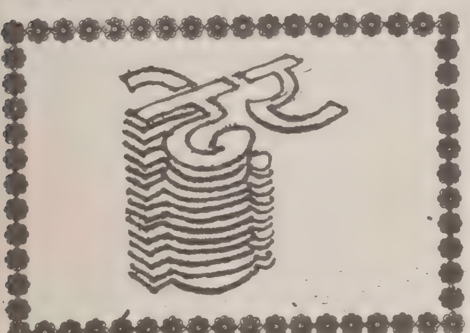
'चुप रहो शोभना···यह हमारी आज्ञा है। आज हम देखना चाहते हैं कि हमारी बेटी की धमनियों में कैसा रक्त है। यह फेरे लेना पसंद करेगी या हमारी लाश देखना पसंद करेगी?'

'डैडी···!' पद्मिनी रोती हुई बोली, 'भगवान के लिए मान जाइये डैडी।'

'पद्मिनी···हमने तुम्हें एक मिनट दिया है?'

अचानक अविनाश ने सेहरा हटाकर आगे बढ़कर कहा—

'रहने दीजिए डैडी···अगर पद्मिनी का यही फैसला है तो मैं इस फैसले के आगे सिर झुकाता हूं।'



सेठ साहब ने अविनाश को आश्चर्य से देखा और बोले—

'अविनाश! यह तुम क्या कर रहे हो?'

'हां सेठ साहब।' अविनाश ने बोझिल आवाज से कहा, 'मैंने जाने कब से पद्मिनी का प्यार अपने सीने में छुपा कर रखा था—मुझे नहीं मालूम कि मुझसे कौन-सी भूल हो गई है—पद्मिनी क्यों मुझे ठुकरा रही है—लेकिन में इतना जानता हूं कि जबर्दस्ती के रिश्ते कभी सफल नहीं होते।'

'रिश्ते सफल हों या न हों।' सेठ साहब बन्दूक की नली अपनी कनपटी से लगाए हुए बोले, 'मैं इस समय तुम्हारी बात भी नहीं सुनूंगा—पद्मिनी के फेरे तुमसे होंगे—जरूर होंगे—और अभी होंगे—वरना में अभी—इसी जगह—अपने प्राण दे दूंगा।'

'बेटी पद्मिनी—!' शोभना लड़खड़ाती हुई लाठी छोड़कर अनुमान से पद्मिनी की ओर बढ़ी। उन्होंने पद्मिनी के सामने आंचल फैलाकर गिड़गिड़ा कर कहा, 'मेरी लाल—मेरे सुहाग की रक्षा अब तेरे हाथ में है—भगवान के लिए यह तो सोच कि में तेरी मां हूं—तेरी वह मां जिसे तूने लाठी बनकर सहारा दिया था—जिसे तूने आंखें बनकर प्रकाश दिया था—तू अपनी उस मां का सुहाग छीन लेना चाहती है? मांग उजाड़ देना चाहती है? में तेरे आगे हाथ जोड़कर आंचल फैलाकर भीख मांगती हूं—मेरे सुहाग पर आंच न आने दे—भगवान के लिए मेरा सुहाग बना रहने दे—डैडी की बात मान ले।'

'मां—मां···!' पद्मिनी रोती हुई बोली, 'मैं तुम्हें कैसे बताऊं मां—में तुम्हें कैसे समझाऊं कि में कितनी मजबूर हूं।'

'ठीक है—!' सेठ साहब गुर्राये, 'तुम मजबूर हो तो में भी मजबूर हूं।'

अचानक सेठ साहब ने बन्दूक का घोड़ा दबा दिया और साथ ही पद्मिनी की चीख गूंजी—

'डैडी—!'

'नाथ—!' शोभना पागलों की भांति चिल्लाई।

लेकिन घोड़ा दबते-दबते यशपाल ने बड़ी फुर्ती से झपटकर बन्दूक की नाल सेठ साहब की कनपटी से हटा दी थी···गोली ऊपर लगे सायवान को चीर गई थी। सेठ साहब के हाथ से बन्दूक छीनने का प्रयत्न करते हुए बोले—

'सेठ साहब···यह आप क्या कर रहे हैं सेठ साहब?'

'भाई साहब!' सेठ साहब बन्दूक को अपनी ओर खींचते हुये बोले, 'छोड़ दीजीये, मुझे मर जाने दीजीए।'

'भाई साहब!' यशपाल ने क्रोध से एक झटके से बन्दूक सेठ साहब के हाथ से छीन ली और बोले, 'आप आत्म-हत्या करके मां के सुहाग की कातिल पद्मिनी को बनाना चाहते हैं···लेकिन मैं अपने जीवन में ऐसा नहीं होने दूंगा···आप आत्म-हत्या तो करने चले हैं लेकिन आप ने अपनी बेटी से पूछने का भी कष्ट किया कि वह यह शादी क्यों नहीं करना चाहती?'

'मामाजी···!' पद्मिनी की अवाज भर्रा गई।

'नही बेटी··बहुत हो चुका···!' यशपाल क्रोध-भरे स्वर में बोले, 'अब मैं चुप नहीं रह सकता···जिस प्रकार रामदेई मेरी बहन थी ऐसे ही तुम्हारी मां होने के नाते शोभना बहन भी मेरी बहन हैं···अब जबकि इनके सुहाग उजड़ने का उत्तरदायित्व तेरे सिर आ रहा है तो मैं चुप नहीं रहूंगा···मैं शोभना बहन को सारी सच्चाई बताकर ही रहूंगा···इसी में सबकी भलाई है।'

'डैडी···!' पद्मिनी की आवाज कांप गई।

'यशपाल जी···।' सेठ साहब कुछ घबरा गए।

'बस···सेठ साहब···बहुत हो गया, मेरी भानजी इस प्रकार भरी सभा में अपमानित हो···यह मैं नहीं देख सकता···और भानजी भी वह कि जो पढ़ी लिखी, नूतन विचार रखते हुए भी इतनी सभ्यता की मालिक है कि आप लोग इसे देवी समझें तो भी कम है।'

शोभना ने कंपकंपाती आवाज में आगे बढ़ कर कहा—

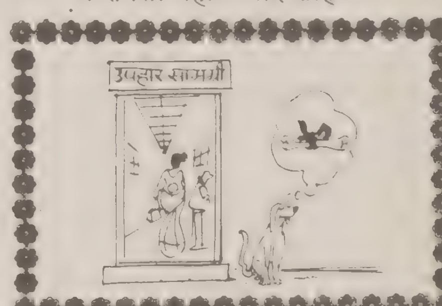
'भाई साहब, आप कौन हैं? क्या सच्चाई बताना चाहते हैं मुझे—?'

'बहनजी···' यशपाल ने कहा, 'आपका अपना कोई भाई है?'

'जी नहीं···मैं तो बचपन ही से एक भाई के लिये तरसती चली आ रही हूं।'

'तो फिर आप आज से मुझे ही अपना भाई समझ लीजिए···क्योंकि मेरे आपके बीच ऐसा ही कोई सम्बंध है कि मैं स्वयं आपका भाई बन जाता हूं।'

'मैं समझी नहीं···भाई साहब।'



'बहनजी···आप ही के समान मेरी एक बहन थी···रामदेई···बहुत चाहती थी वह मुझे। मैंने अपने हाथों से उसका रिश्ता एक बहुत बड़े घराने में किया था···हीरापुर के जमींदार ठाकुर धर्मपाल सिंह उसके पति थे···भगवान ने उन दोनों को एक चांद सी बेटी दी थी जिसका नाम मुन्नी था···मेरी चूंकि कोई संतान नहीं थी इसलिए मैं मुन्नी को सगी बेटी से भी बढ़कर प्यार करता था···लेकिन एक दिन एक बहुत बड़ी भयानक बाढ़ ने सब कुछ तबाह कर दिया···मेरी बहन और मेरा जीजा ठाकुर धर्मपाल सिंह उसी बाढ़ का शिकार हो गए···मैं अभागा बच गया···और साथ ही भगवान ने मेरी भानजी मुन्नी को भी बचा लिया···लेकिन मुझे नहीं मालूम था कि मुन्नी जिन्दा है और अब शादी के योग्य हो चुकी है।'

'क···क···कौन है आपकी भानजी मुन्नी?' शोभना ने कंपकंपाती आवाज में पूछा।

'यही···जो आपकी बेटी पद्मिनी है।'

'नहीं···!' शोभना हड़बड़ाकर पीछे हट गई।

शेष आगामी अंक में

श्री श्री १००८ डिस्को आचार्य व्हिस्की पति सुट्टा शास्त्री बाबा चिऊंइगमानन्द जी महाराज कृत

पॉप कल्चर पुराण

जींस पैंट और टीशर्ट पहनने वाले भाइयों और बेबियों, आज हमारे देश में नयी पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति का अन्धानुकरण कर रही है। पाप संस्कृति हमारी रग-रग में कोका कोला के साथ घुस गयी है। हमारे देश में वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता तथा किस्सा तोता मैना तो है लेकिन अब तक इस नये पाप धर्म पर रोशनी डालने वाली कोई किताब नहीं है। हमने अपने नये पीढ़ी के बेबियों के लिये पाप धर्म की व्याख्या करने व परिचय देने वाले ग्रंथ 'पाप कलचर पुराण' की रचना के लिए बाबा चिऊंइगमानन्द जी महाराज को किराये पर लिया। बाबा ने एक किलो चरस दो दर्जन व्हिस्की और १००८ नग चिऊंगम चबाकर इस अनूठे ग्रंथ की रचना की है। इस महान् ग्रंथ को आप अपना वेद समझ इसमें बताये दर्शन को स्वीकार कर अपना जीवन सफल बनाइये। जय बाबा चिऊंइगमानन्द जी महाराज जी।

पॉप शान्ति मंत्र

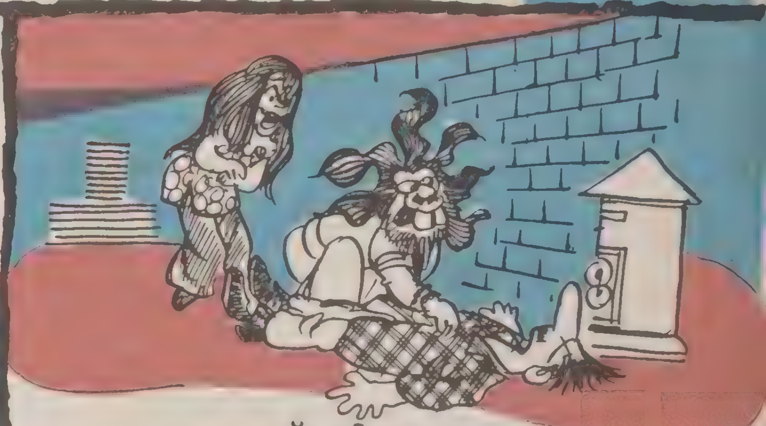
बच्चा, हर समय मुंह में चिऊइंगम रख। यह दुनिया में शान्ति का सबसे महान अस्त्र है। विश्व में सारे युद्ध मनुष्य की जुबान व मुंह के कारण हुए हैं। मुंह व जुबान चिऊइंगम खाने में चौबीस घंटे व्यस्त रहेंगे तो कोई अप्रिय बात नहीं निकलेगी व विश्व में शान्ति व अमन की स्थापना होगी।
ओ३म शांति शांति शांति चिकाचिक ! चिकाचिक !!





पॉप अहिंसा मंत्र

हे बेबी, पॉप म्यूजिक का एल.पी. लगाकर रोज उछल-उछल कर सिर झटका कर डांस कर। झटके के कारण जुयें अपने आप झटक कर गिरेंगी। तुझे जुयें मारने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इस प्रकार तुझ पर हिंसा का पाप नहीं चढ़ेगा। तुझे दस गौओं के दान का पुण्य प्राप्त होगा, ऐसा श्री बाबा चिऊइंगमानन्द जी ने कहा।
हैरी ओ३म टटसट।



पॉप धर्म पुरस्कार

हे नाईमर्दन युवक, तू अपने बाल मत कटा, दाढ़ी बढ़ा। यह पॉप धर्म की वर्दी है। इतने बढ़ा कि अंधेरे में तुझे देख भूत-प्रेत का गुमान हो। यदि अंधेरी गली में तुझे अचानक देखकर कोई पुरातन पंथी तुझे भूत समझ बेहोश हो जाये तो तू संकोच न कर। उसकी जेब से बटुआ निकाल और अपनी जेब के हवाले कर। इसे तू पॉप धर्म का बोनस समझ ले। इसीलिए तो दास कबीरा गाड़ी में चढ़ते-चढ़ते कह गये "बेटा तू हमारे साथ रहेगा तो इसी प्रकार ऐश करेगा"। शुभम् लाभम्-फोकट इनकम्! बोल बाबा बैंक बैलेंस दास की जै !!



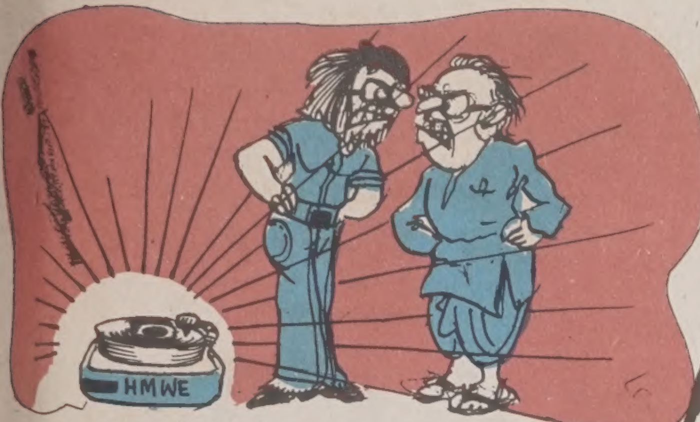
पॉप शक्ति मंत्र

हे बीटनिक बालक, तू भी फुल वाल्यूम पर पॉप संगीत का रिकार्ड लगाकर शम्मी कपूर की तरह मटक-मटक कर नाच। यही तेरा व्यायाम है। इससे तेरा शरीर हृष्ट-पुष्ट होगा और तू मुश्टंडा लगेगा। बेबियों की डेटिंग के लिए फाइटिंग में तू जीतेगा। हिन्दी फिल्मों के हीरो की तरह गम के गाने गाकर देवदास की तरह अकाल मौत मर कर नर्क जाने को बाधित नहीं होगा।
जय संत पॉलीडार दास की।

पॉप लाइट

हे ब्लेक आउट प्राणी, तू डांस तो करता है लेकिन बत्ती बुझाकर डांस किया कर, इससे डांस में रोमांस का तड़का लग जायेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि गर्मियों में ब्लेक-आउट तो रहेगा ही, बिजली अपनी मर्जी से आयेगी व जायेगी। तो बच्चा, क्यों न डार्क ऐज की ही तैयारी की जाए। पॉप धर्म की महिमा देखो, वर्तमान सीचुऐशन से खुद को कैसे जोड़ लिया। जब पॉप धर्म चारों ओर फैल जायेगा तो बिजली की किसे जरूरत होगी? देखते-देखते एनर्जी क्राइसिस हल हो गया। बोलो सन्त प्लगराम की जय मर्सीडीजकार !!





यह डिस्क डिस्क है डिस्क डिस्क

बच्चा, अपने कमरे में पॉप म्यूजिक खूब जोर से बजा ! घर के बूढ़े तंग आकर लड़ने आ जायेंगे। तू भय मत खा। श्री मुरार जी ने कहा है निर्भय बनो। सीना तान कर खड़ा हो ! आंखों में आंखें डाल और दांत पीसने का जवाब दांत पीस कर दे। यह महान धर्म युद्ध है। इस युद्ध में पीछे हटा तो घोर पाप का भागी बनेगा। याद रख तू अकेला नहीं है। तेरी दाढ़ी और सिर की जुयें भी तेरे साथ हैं।

पॉप शस्त्र विद्या

हे पॉप वीट, चित्रकूट पर्वत पर फाइव बैडस एटैच्ड बाथ, डाइंग-डाइनिंग, सर्वेन्ट क्वार्टरस, गैराज एण्ड लॉन वाली कुटिया में रहने वाले सन्त ऐसी-डीसी दास ने अपने ग्रन्थ में बताया है कि पॉप धर्म का मूल सूत्र इलेक्ट्रिक गिटार है। इसकी डोरी को जनेऊ समझ गले में लगा ले। जिस प्रकार अर्जुन के कन्धे से गांडीव धनुष लटकता रहता था, उस प्रकार तेरे गले में गिटार लटकता होना चाहिए। उस पर नील डायमंड के भजन गा ! राग मालकौंस या दरबारी कान्हडा बजाने में बिजली खर्च मत कर। इस गिटार के कारण तेरी गर्दन मजबूत होगी। गर्दन तोड़ बुखार भी तेरा कुछ बिगाड़ नहीं पायेगा !! विक्ट्री टू रैम चान्ड्रा दि हसबैंड ऑफ सिया !!



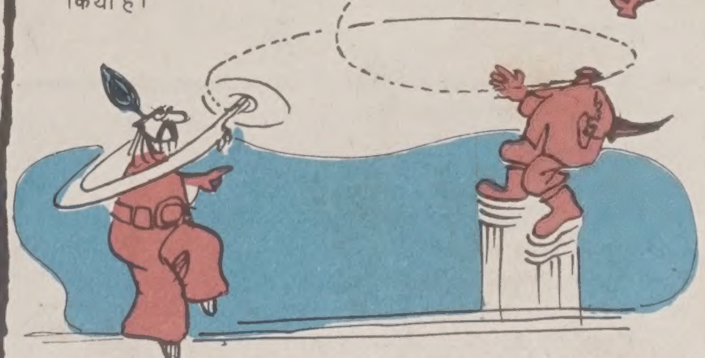


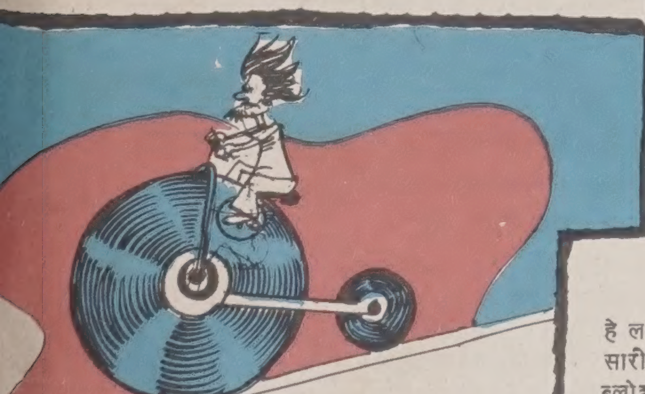
पॉप म्यूजिक

बालक, पॉप म्यूजिक ही पॉप संस्कृति की जान है। पॉप म्यूजिक क्रियेट करने के लिए खास वाद्यों की आवश्यकता भी नहीं है। टीन-कनस्तर, डिब्बे प्लेटें और पुराने टायरों से भी काम चलता है। हर रोज पॉप म्यूजिक बजा कर पॉप धर्म के आराध्य देव एल्विस प्रेस्ली की पूजा की जा सकती है। इतना कम खर्चीला धर्म तुझे और कहीं नहीं मिलेगा। जा ऐश कर।

पॉप सुदर्शनि चक्कर

ओ हिप्पी भाई, पुराने रिकार्डों को मत फेंक। यह तेरी आबरू है। गौ माता का यह आधुनिक रूप है। जैसे गौ माता मरने के बाद भी काम आती है उसी प्रकार रिकार्ड घिसने के बाद भी काम आयेगा। इसे सुदर्शन चक्र की तरह उपयोग कर दुश्मन का सिर काटा जा सकता है। लार्ड कृष्णा इसी के बल पर नयी-नयी बेबियां उड़ा कर लाते थे। महात्मा प्लास्टिक दास ने अपने धर्म ग्रन्थ एन्साइक्लोपीडियम ब्रिट्टेनियम में ऐसा ही वर्णन किया है।





पॉप वाहन

हे मैन्ड्रेक रसिक बच्चा, अगर चरस और गांजे ने तेरा शरीर कबूतर जैसा बना दिया है तो तू इस मंत्र के फल का भागी है। अपने किसी मैकेनिक बाल सखा सुदामा से एक एल पी और एक छोटे रिकार्ड को पहियों की तरह प्रयोग कर साइकिल बनवा और उस पर बैठ कर गर्ल्ज होस्टलों की परिक्रमा कर। तेरे मन को शांति मिलेगी। मरने पर तू सीधा बैकुन्ठ लोक के मैडिकल इंस्टीच्यूट में जायेगा और अप्सरा परियों की सेवा का फल पायेगा। जय बोलो बिंदिया कम एण्ड गोस्वामी की।

पॉप मन्दिर

हे लम्बे बालों वाले प्राणी, अपने कमरे की सारी दीवारों पर अपने प्रिय पॉप गुम की ब्लोअप तस्वीरें चिपका। कमरे में बैठे-बैठे तुझे चारों धाम तीर्थ स्थानों के दर्शन का पुण्य प्राप्त होगा। कमरे में भूत प्रेत भी आते हुए डरेंगे। ऐसा ऋषि विश्वामीटर ने अपने स्टूडेंट्स रैम चान्ड्रा और लक्स मैन को बताया।

जय जय गुरु देव !







काम है हराम

हे भक्त, तू काम को हराम समझ। काम करना पॉप धर्म के अनुयायी को रास उसी तरह नहीं आता जैसे कुत्ते को घी रास नहीं आता। पॉप धर्म में काम के लिए कोई जगह नहीं है। पॉप धर्म एक स्वच्छन्द आजाद प्राणियों का धर्म है। काम के चक्कर में पड़कर तू घनचक्कर हो जायेगा। नून-तेल-लकड़ी का फंदा अपने गले में मत पड़ने दे। तुझे पॉप धर्म के बहुत से धार्मिक कार्यों में अपने समय का सदुपयोग करना है जैसे बेबियों को देख सीटी बजाना, पिक्चर देखना, पार्क में बैठकर दोस्तों की महफिल में सुट्टा लगाना, आदि। मोह माया के जाल से मुक्त रह।

पॉप क्रिया कर्म

हे टैन स्पीड प्रेमी भक्त, तू सदा अपनी मोटर-साईकिल को साठ मील से
की स्पीड पर ही चलाया कर। गति पॉप धर्म का मूल मंत्र है। पीछे
बॉब हेयर वाली को बिठा। जैसे पुरातन धर्म में बिना पुत्र के मनुष्य गति
पाता उसी प्रकार पाप धर्म में बगैर गर्ल फ्रैंड के किसी को मुक्ति नहीं
जितना वह सट कर बैठेगी उतना ही अधिक आत्मा व परमात्मा का
होगा। पॉप धर्म में वीर गति उसे प्राप्त होगी जो तेज साइकिल चला
एक्सीडेंट को प्राप्त होगा, उसी में आग लगे और वहीं उसकी दाह क्रिय
जब तक जीओ एक्सीलेटर दबा कर जीओ। ओ३म् स्वाहा ॥



पॉप कंघा विरोध

हे अर्जुन, तू ध्यान से सुन। कंघा जहर है। तुझे कभी अपने उलझे बालों में कंघी नहीं करनी है। तू तो अपनी गर्लफ्रैंड की गोद में सिर रखकर गाना गायेगा, 'बालम लट सुलझा जा रे।' कंघी को शैतान का जीता जागता रूप समझ। कंघा बुर्जुआ प्रवृत्ति के लोगों का ईजाद किया मंत्र है, नयी पीढ़ी को पथभ्रष्ट करने का। उलझे बाल पॉप कल्चर का ट्रेड मार्क है। इसे तू सुरक्षित रख। यदि तू छः महीने तक कंघी नहीं करेगा तो तुझे सपने में डर्टीडजन के बारहों कलाकार आकर वर देंगे।
इतिश्री पॉप धर्म पुराणम् ॥



पॉप धर्म शंखनाद

हे रॉयल एनफील्डारोही, तू कभी मोटर-साइकि
साइलेंसर मत लगा। जिधर से निकले सबके
फाड़ता हुआ जा। सरकार सबसे कह रही है कि
की आदतें बदलो। अतः तू लोगों का सिर खाना छो
कान खा। तुझे अपनी पीढ़ी का बदला भी लेना है
कर वह दिन जब तेरे एक्जाम होने थे और भगवती
रण वालों ने रात भर लाउडस्पीकर लगा कर भज
गाकर तुझे पढ़ने नहीं दिया था। अब बदले का मौ
तेरी मोटर-साईकिल की फटाफट फटफट वास
पुरातन धर्म व पॉप धर्म में लड़ाई का बिगुल
हमारा धर्मवीर बिगुल वादक है। तेरा कल्याण



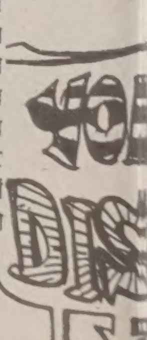
पॉप मूल मन्त्र

बागी प्राणी, बड़े-बूढ़ों की अवहेलना करना तेरा फर्ज है। डिसिप्लिन नाम की चीज को तू गाली समझ। अनुशासन और बड़े-बूढ़ों की इज्जत का नारा लगा कर हमेशा बूढ़ी पीढ़ी ने जवान पीढ़ी को गलत रास्ते पर डाला, गुलाम बनाया। बड़े-बूढ़ों की इज्जत और शऊर एक षड्यन्त्र है। नयी युवा पीढ़ी को अपने दकियानूसी जुये में जोतने का हल है जिसे वह पुराने रीति-रिवाज और शोषण के खेत में जोतते हैं। इससे सावधान रहो। जैसे धोबी का गधा धोबी को कपड़ों का गट्ठर बांधते देख कान खड़े करता है उसी तरह तुम कान खड़े करो और भाग जाओ, भाग जाओ।



पॉप डबल मंत्र

हे सिंगल मूर्ख, पॉप धर्म अकेला रहना काफिर का काम समझता है। हमेशा डबल रहो। मूर्खानन्द, कोई प्रेमिका फांस। प्रेमिका को लेकर डिस्कोथेक जाना दकियानूसी लोगों का वैष्णो देवी यात्रा जाने के बराबर पुण्य का काम है। प्रेमिका को कोना आइसक्रीम खिला। एक आइसक्रीम तुझे किसी देवी के मन्दिर में सोने का छत्र चढ़ाने बराबर फल देगी। फल तुझे साथ के साथ मिलेगा। अपनी आंखों व अक्ल से काम ले और फल देख। नहीं नजर आया तो हम यही कहेंगे
"बुद्धू कहीं का"।
राम तेरी ही खैर करे।



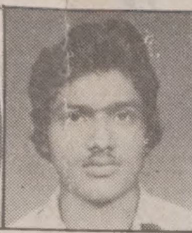




...नी' ई० ६३, ...स्कीम जयपुर, ..., फुटबाल व ..., मित्र इकट्ठे ... पढ़ना।



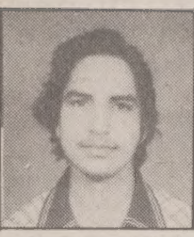
दिलावर हुसैन, दिलकश रेडियो श्रोता संघ स्टेशन रोड, बेगसराय, २८ वर्ष, श्रोताओं एवं अन्य स्टेशनों में फरमाइशें भेजना।



एम० एच० बादल, c/o मुमताज अहमद, खजांची हाट, पूर्णिया, १६ वर्ष, दीवाना पढ़ना, कहानियां लिखना, व पत्र-मित्रता करना।



मो० कसीम अहमद, डा० वज़ीर अली रोड, गया बिहार, १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, कोर्स की किताब पढ़ना, और दीवाना पढ़ना।



ललित कुमार बनवानी, सिन्धी कालोनी, भरथना, २०६२४२ (इटावा) उ० प्र०, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना।



पविन्द्र सिंह, बी-१० म०-नं० २६२, नीम वाला चौक, लुधियाना, ५ वर्ष, खेलना, पढ़ना और गाने सुनना, मार-पीट करना।



ब्रज भूषण बजाज, c/o समीर टाईपराईटर्ज, लोहारु रोड, भिवानी, १७ वर्ष, क्रिकेट खेलना, एक्टिंग करना, पत्र-मित्रता करना।



...६/३०१ कर्नल ...१८ वर्ष, पत्र-... दीवाना पढ़ना, ... गाने गाना, ...।



एजाज अख्तर, गफ्फार होटल, भवानी पुर, खड़गपुर, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, शेर-शायरी करना, क्रिकेट खेलना।



मोहन पाल, २३४ जी. एन. टी. मार्केट, इन्दौर (म० प्र०) १६ वर्ष, तैरना, पत्र-मित्रता करना, गणित पढ़ना, दीवाना पढ़ना।



प्रकाश कुमार धिमिरे, २/६५ त्रिपुरेश्वर, काठमाण्डो, नेपाल २० वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना, न्युकार्ड संकलन।



सुरेन्द्र रायजादा, ३३६३ कूंचा काशगारी, सीताराम बाजार दिल्ली-६, १३ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फोटो खींचना, ऐतिहासिक स्थान देखना।



राजेन्द्र कृष्ण शर्मा, ताहाचल ७/२३ काठमाण्डो, नेपाल, २० वर्ष, जनता का भला करना, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।



विजय कुमार श्रेष्ठ, थापाथलि १/५१६, १४ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना तथा खेलना, गाने गाना, क्रिकेट खेलना।



...ष्ठ, १/५११, ...काठमाण्डो, १४ ...ता करना, फुट-... दीवाना पढ़ना,'



दीपक चावला, ए० के० २०, आराकशां रोड, पहाड़ गंज, नई दिल्ली-५५, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता, खेलना व कार्टून बनाना।



विष्णु कुमार मानन्धर २०/२६ कृष्ण मानन्धर कमल पोखड़ी नेपाल, १८ वर्ष, तास व पत्र-मित्रता करना, फुटबाल व क्रिकेट खेलना।



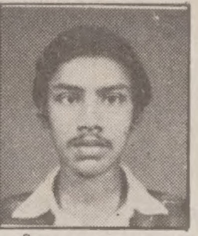
मोहम्मद पईम, इलाइतर्ट्रेस पो. बा.-१६५, खिचापोखड़ी, नेपाल, १५ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, घूमना।



लखबीर सिंह सेहमी, १८४/२ इंजीनियरिंग कालोनी, फाफाडीह, रायपुर, (म० प्र०) १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, डाक टिकट संग्रह करना।



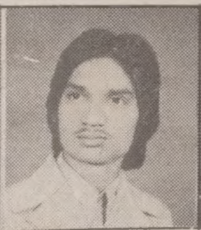
राकेश कुमार गुप्ता, १६ वारेन गंज, सीपरी बाजार, झांसी, यू० पी०, १५ वर्ष, सिनेमा देखना, हसना और हंसाना व क्रिकेट खेलना।



अनिल कुमार, जय राम हाऊस चौखन्टीपुर, बिहार, शरीफ, (नालन्दा), १६ वर्ष, पत्र-मित्रता, कविता व कहानियां लिखना।



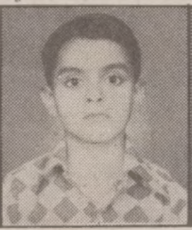
...नी, ए० १३/ ...१२५ बैरागढ़ ...प्र०) १८ वर्ष, ...पढ़ना, लिखना ...।



अशफाक अहमद, १२ रिवर साइड रोड, इन्दौर, २० वर्ष, पत्र-मित्रता एवं गजल लिखना दीवाना पढ़ना, हंसना और हंसाना।



पप्पी खुराना 'शालू' होतीराम घनश्याम दास, सब्जी मण्डी जींद, (हरि०), १८ वर्ष, फोटो खींचना, दीवाना पढ़ना, प्रेम पत्र लिखना।



लखमी चन्द, म० नं० ३७७, काशी पुरा, आगरा, १४ वर्ष, कमेंट्री सुनना, सिक्का जमा करना, दीवाना पढ़ना, क्रिकेट खेलना।



राजेन्द्र कुमार शर्मा, राम सागर पारा, पंजाब आईल मील, १८ वर्ष, रेडियो सुनना, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।



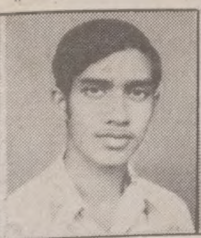
जसंबीर सिंह नागपाल, १७ शुक्रवारी हाट देवास (म. प्र.) ४५५००१, २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दोस्ती करना एवं दोस्तों को चिढ़ाना।



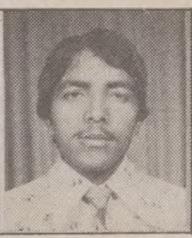
एस कुमार c/o जोगी खुराना; २७६/२३ जवाहर नगर, रोहतक, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, नए मित्रों से फरमाईश और दीवाना पढ़ना।



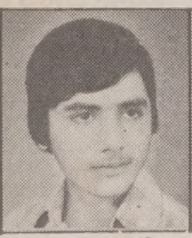
...म० नं० एच ...र रायपुर, ...वर्ष, क्रिकेट ...मित्रता और



जॉय मजूमदार, नया सरकन्डा बिलासपुर, म. प्र. ४६५००१ १६ वर्ष, पत्र-मित्रता, सैर करना, दीवाना पढ़कर दीवाना बनना।



रघबीर सिंह चौक मे २३ वी वाहिनी एस. ए. एफ. भोपाल म० प्र०, २२, वर्ष, बड़ों का आदर करना, दीवाना पढ़ना, सिनेमा देखना।



अमीत कुमार, न्यू इण्डिया. फैन्सी स्टोर, बस स्टैण्ड, बलांगीर (उड़ीसा), १७ वर्ष, पत्र मित्रता फिल्म देखना, घूमना, कामेंट्री सुनना।



शेर सिंह गहलोत, ६५६ मरदारपुरा, १२डी रोड, जोधपुर, १६ वर्ष, नित्य भलाई करना, गाने गाना, दीवाना पढ़ना व घूमना।



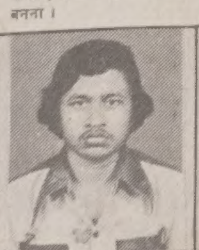
मुनील भड़कतिया, २३३५, मोती सिंह मोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-३ १६ वर्ष, मैगजीन, पढ़ना व खेलना।



मोहम्मद रहूफ खान, मदार टेकरी, कुन्दन नगर, २०२/३५ अजमेर, १८ वर्ष, फुटबाल खेलना, दीवाना पढ़ना, गीत लिखना।



...हरि नगर, ...ती-१४, १७ ...और फिल्म ...ना, दीवाना



राजकुमार अग्रवाल, होशयारी कारपोरेशन, १७१/ए महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता-७, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, गीत गाना।



राजेश मोंगा, मोंगा निवास, कृष्ण गली नं० १, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता, टिकट संग्रह करना, दीवाना पढ़ना।



गोपाल कुमार टिबड़ेवाल, मील रोड, खगड़िया (बिहार) १८ वर्ष, पत्र-मित्रता, पत्रिकाएं पढ़ना, सैर करना, फिल्में देखना।



राजेश गुप्ता उर्फ संदेड़ा, मुदड़ा निवास, सन्देड़ा रोड, म० न० ३२, ब्यावर (राज०), १८ वर्ष, टेबिल टेनिश खेलना, दीवाना पढ़ना।

...ना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

हमारा पता : दीवाना फ्रेंड्स क्लब
८-ब बहादुरशाह ज़फर मार्ग
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ________

पता ________

आयु ________ शौक ________

Regd. No. D (D) - 275

